—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

मार्च, 2007 — वर्ष 6 — अंक 01

रह्मतुल्लिल् आलमीन्

वमा अर्सल्नाक इल्ला रह्मतल्लिल् आलमीन और हम ने आप को तमाम आलम के लोगों पर सिर्फ़ मेहरबानी करने के लिए भेजा है।

(पवित्र क़ुर्आन २१:१०७)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

इज़हारे शुक्र व इह्सान	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
सीरतुन्नबी	स० सुलैमान नदवी	8
विलादत शरीफ़	मौ० अ़ब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी	11
शेर शाह सूरी	मौ० स० अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	12
संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अ़ब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	13
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	16
दुरूद शरीफ़ के मसाइल	ह़ज़रत शैख़ुल ह़दीस (रह०)	17
हिन्दोस्तान में दीनी मदारिस	मौ० अ़ब्दुल करीम पारीख	18
आइना क्यों न दूं कि तमाशा कहें जिसे	सय्यिद ह़ामिद	21
ज़िक्रे रसूल (सल्ल०) (पद्य)	अबू मर्ग़ूब	23
मेरी मीलाद ख़्वानी	सम्पादक	26
इतिहास के झरोखे से	मुम्ताज़ अह्मद मिस्बाही	29
क्या महज़ मुसलमान होना काफ़ी नहीं?	मौ० अ़ब्दुल माजिद दरयाबादी	31
ह़रमे मदनी की तौसीअ़	अबुल मुअ़ज़्ज़म नदवी	32
ज़िम्मेदारी का एह्सास	मौलाना अ़ली मियां	34
इन्सानी जान व माल का नुक्सान करते जानवर	मुशर्रफ़ अ़ली	35
बच्चों के रोग	डा० अ़ब्दुल्लतीफ़ चतुर्वेदी	37
बच्चों की ममता	सुरैया ख़ानम	38
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

इज़हारे शुक्र व इहसान (कृतज्ञता) प्रकाशन

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हम मुसलमान है, हमारा मानना है कि इन्सान जो कुछ करता है, वह खुदा की दी हुई तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) व ताक़त ही से करता है। हम को लिखते और आप को पढ़ते, पांच साल हो गये और छठे साल का पहला परचा आपके हाथों में है।

गर न दे तौफ़ीक़ रब तो कुछ नहीं कर सकते हम।
है अगर तौफ़ीक़ शामिल आगे बढ़ सकते हैं हम
पांच पूरे कर लिये है और छठे हम साल में।
रब्बि यस्सिर ला, तुअ़स्सिर कह के है रखते क़दम।।

शुक्र और एहसान है उस रब्बे करीम का जिसने पांच साल तक अपने बन्दों की ख़िदमत का मौक़अ़ इनायत फरमाया और शुक्रिया अदा करते हैं अपने मुहतरम सहयोगियों (मुआविनों) का यअ़नी जनाब मुह़सिन अन्सारी साहि़ब, जनाब मौलाना मुह़म्मद गुफ़रान नदवी साहि़ब, जनाब मौलाना मुह़म्मद सरवर फारूक़ी नदवी साहि़ब और जनाब ह़बीबुल्लाह आज़मी साहि़ब का अल्लाह तआ़ला इन सबको भर पूर बदल अ़ता करे कि इनके सहयोग ही से हम अपने पाठको की ख़िदमत कर सके हैं। फिर जनाब मुह़म्मद सलमान अन्सारी साहि़ब का भी शुक्रिया कि अगर वह वक़्त पर कम्पोज़िंग का काम पूरा न करते तो परचा वक़्त पर न निकल सकता और जनाब मसीहुज़्ज़मां साहि़ब की तवुज्जुह न होती तो परचा हु़स्नव जमाल से आरास्ता न हो सकता। आफिस के किलर्क और दूसरे कारकुनान (कर्मचारी) अगर सहयोग न देते तो परचा वक़्त पर पोस्ट नहीं हो सकता था और जनाब नाज़िरे आ़म नदवतुल उ़लमा मौलाना मुह़म्मद ह़मज़ा साहि़ब ह़सनी नदवी तथा पत्रकारिता विभाग के सिक्रेट्री मास्टर अतहर हुसैन एम०एस०सी० (सा०) और मैनेजर डा० मुईद अशरफ़ नदवी की तवुज्जुह न होती तो हम काम्याब नहीं हो सकते थे, हम सभी ह़ज़रात (सज्जनों) का दिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि अब तक जो कुछ हम लोगों ने लिखा है और हमारे पाठकों ने पढ़ा उसमें अगर कुछ हमारे क़लम से ग़लत लिख गया है तो उसको हमारे पाठक भूल जाएं और जो कार आमद (लाभदायक) बातें उन तक पहुंची हैं उनसे उनको लाभ पहुंचे।

हमारे पाठकों द्वारा यह बात हमको बराबर पहुंचाई जाती रही कि सच्चा राही की भाषा (ज़बान) कठिन है, हम भी बराबर एअ़लान (घोषणा) करते रहे कि हमारे लेखक सरल लिखें, लेकिन यह पत्रिका हिन्दी है, इस में हिन्दी शब्दों का प्रयोग तो होगा ही, फिर भी ऐसे कठिन शब्दों से हम ख़ुद ही बचते हैं जिनके लिए शब्द कोष उठाना पड़े। इसके बावजूद हम इससे पहले लिख चुके हैं और फिर दोहराते हैं कि हमारे वह पाठक जिनको सच्चा राही की भाषा कठिन लगती है ऐसे दस शब्द पचास पैसे के एक कार्ड पर लिख भेजें जो उन के निकट कठिन हों, हम उन का पत्र सच्चा राही में प्रकाशित भी करेंगे और अपने लेखों में इसका ध्यान भी रखेंगे कि ऐसे कठिन शब्द न लाएं। इस विषय में हम अपने पाठकों के पत्रों की प्रतीक्षा (इन्तिज़ार) करेंगे।

हमने यह भी लिखा कि हमारे पाठक हो सकता है उर्दू लिखना पढ़ना न जानते हों लेकिन उनकी और उनके घर की बोल चाल उर्दू है, उनकी सक़ाफ़त (संस्कृति) उर्दू है क़ोई काम शुरूअ़ करने से पहले वह बिस्मिल्लाह पढ़ते हैं, वह ख़ुश होते हैं तो ईश्वर को धन्यवाद कहने के बजाए "अल्हम्दु लिललाह" कहते हैं उसकी पवित्रता के वर्णन के स्थान पर सुबहानल्लाह कहते है, कोई अच्छी चीज़ देख कर "माशा अल्लाह कहते है, रंज व ग़म की बात पेश आती है तो इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहते हैं, कोई नागवार बात पेश आती है तो "लाहौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह" पढ़ते हैं किसी कठिन काम के सामने आ जाने पर भी "ला हौल वला क़ुव्वत" पढ़ कर अल्लाह ही की ताक़त व क़ुव्वत का इक़रार करते हैं। कोई ग़लत काम हो जाता है तो तौबा तौबा अस्तग़फ़िरूल्लाह कहते हैं, ख़ुशी के मौक़िअ़ पर एक दूसरे को बधाई देने के बजाए मुबारक बाद देते हैं, बात चीत में मुस्तक़्बिल में किसी ख़तरे या ना गवारी के अन्देशे पर ख़ुदा न ख़्वास्ता बोलते हैं। इन तमाम मौक़ों (मौक़ओं) पर अगर हम हिन्दी संस्कृति का शब्द लाते हैं तो उनको अच्छा नहीं लगता, बल्कि जब उनको इसका एहसास होता है कि इससे तो उनकी सक़ाफ़त ही मिट जाएगी तो इसका विरोध भी करने लगते हैं और यह उनका हक़ है।

कुछ तरकीबों में तो अ़रबी फ़ार्सी के लफ़्ज़ों की जगह जब हिन्दी शब्द लाते हैं तो उर्दू तर्ज़ तो तर्क होता ही है साथ में ऐसा लगता है जैसे रेशम में टाट का पैवन्द लग गया। ख़ुदा की कृपा, अल्लाह की दया, सुब्ह के समय, हम ज़ुल्फ़ साहिब का देहान्त, मेरे साहिब ज़ादे का विवाह इसी तरह की तरकीबे हैं। उर्दू सक़ाफ़त वाले किसी हिन्दी भाषी को परिचय देते समय इस तरह जरूर कह देते हैं कि यह मेरे पिता जी हैं, यह मेरी माता जी हैं। लेकिन घरेलू बोल चाल में वह अब्बा अम्मा या वालिद वालिदा ही कहते हैं माता, पिता नहीं बोलते। वैसे सैकड़ों ठेठ हिन्दी शब्द जैसे भाई, बहन, बहनोई, चचा, चची, मामा, (मामूं) मामी (मुमानी) फूफी, फुफा, रोटी, कपड़ा, लाठी, डन्डा उर्दू सक़ाफ़त का हिस्सा बन चुके हैं और ऐसा क्यों न होता उर्दू ने भारत ही में तो जन्म लिया है, लिहाज़ा भारतीय संस्कृति के शब्दों का उस में होना स्वाभाविक है। कहना यह है कि सच्चा राही के पाठक जैसा कि ख़रीदारों के नामों से ज़ाहिर है ६६ फ़ीसद से ज़ियादा मुसलमान हैं उर्दू सक़ाफ़त वाले हैं लिहाज़ा कोशिश की जाती है कि सच्चा राही पढ़ने वालों की सक़ाफ़त (संस्कृति) मुतअस्सिर (प्रभावित) न हो।

यह बड़ी अच्छी बात है कि हमारे सच्चा राही का यह नया साल इस साल रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने से शुरूअ़ हो रहा है और यह सिलसिला अब मार्च २००६ तक जारी रहेगा। माशाअल्लाह इस परचे में कई लेख इस महीने से मुतअ़ल्लिक़ (सम्बन्धित हैं।)

बेशक यह महीना हम मुसलमानों के लिए बड़ा ही बा बरकत महीना है, और कितनी ख़ुशी का वह दिन था जिस दिन अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुन्या में तशरीफ़ लाए। यह सहीह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वालिद साहिब आपके दुन्या में आने से पहले ही वफ़ात पा चुके थे वर्ना अस्ल ख़ुशी तो उनको होती और बेशक ख़ुशी हुई बीबी आमिना कों, ख़ुशी हुई दादा अ़ब्दुल मुत्तालिब को, ख़ुशी हुई चचा अबूतालिब को यहां तक कि चचा अबू लहब को लेकिन इन सबकी खुशियां एक ख़ूबसूरत, नूरानी चेहरे वाले, सिहत मन्द बच्चे की पैदाइश पर थी अल्लाह के नबी की पैदाइश का तो उन को गुमान तक न था।

फिर आप बढ़ते है जवान होते है, आप अपने अख़्लाक व आ़दात के सबब एक एक फ़र्द

(शेष पृष्ठ २८ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

आखिरत के मुन्किरीन के बेबुनयाद शुबहों का जवाब

कुरआने–मजीद ने इस बारे में, बगैर मुबालिगे के कहा जा सकता है कि, सैकड़ों जगह रौशनी डाली है। और आखिरत का इनकार करने वाले के उन बे बुनयाद बेदलील शंकाओं को जगह–जगह पर दूर किया है। चंद आयतें इस सिलसिले की यहां भी पढ़ लीजिये।

सूरए यासीन के बिल्कुल आखिर में आखिरत के बारे में इन्हीं वह्मी (भ्रमी) शुबहों और वस्वसों का जवाब देते हुए अल्लाह तआला की कामिल कुदरत का हवाला दे कर मुन्किरीन की अक्लों को मुखातब करके इर्शाद फर्माया गया है:–

तर्जमा: क्या वह कादिरे–मुतलक जिसने आस्मान व जमीन (और उनके बीच की सारी मखूलूकात) को पैदा किया है, इस पर कादिर नहीं है कि उन जैसे फिर पैदा करे? बिलाशुबा वह जरूर इसकी कुदरत रखता है और वह तो बहुत मखलूक पैदा करने वाला और सब कुछ जानने वाला है। उसकी शान तो यह है कि जब वह किसी चीज को बनाना चाहता है तो उसको कहता है कि हो जा, तो इतने ही से वह हो जाती है। (यासीन:८२)

यानी किसी चीज को पैदा करने के लिए सिर्फ उसका इरादा और उसकी मर्जी का इशारा काफी है, तो उसके लिए अपनी किसी मखलूक को एक बार मौत दे कर फिर से जिन्दा कर देना क्या मुश्किल है।

और सूरए रूम में फर्माया:–

तर्जमा:– वही है जो मखलूक को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसको पैदा करेगा, और (जाहिर है कि दुबारा पैदा करना उसके लिए बहुत जियादा आसान है) आस्मान व जमीन में उसकी शान सब से आला है, और वह जबरदस्त (कादिरे मुतलक) और हिक्मत वाला है।

और सूरए–हज्ज में इर्शाद है:–

तर्जमा:– ऐ लोगो! अगर तुम को कियामत और मौत के बाद उठाये जाने के बारे में कोई शक है तो (गौर करो कि) हमने तुम को बनाया है मिट्टी से, फिर नुतफा से, फिर बन्धे हुए खून से फिर गोश्त के शक्ल वाले और बिना शक्ल वाले टुकड़े से, ताकि हम अपनी कुदरत तुम्हारे लिये जाहिर करें, और हम ठहरा देते हैं जिस नुतफे को चाहें रहिम (बच्चादानी) में एक तै शुदा मुद्दत तक। फिर बाहर लाते हैं तुम को बच्चा बना कर, ताकि फिर तुम पहुंचों अपनी पूरी जवानी को, और तुम में कुछ वे होते हैं जो उठा लिये जाते हैं (जवानी ही में) और कुछ वे होते हैं जो पहुंचाये जाते है (बुढ़ापे वाली) निकम्मी उम्र तक (जिसका नतीजा यह होता है कि) इल्म–व–समझ हासिल करने के बाद वे फिर (सठिया कर) इल्म से कोरे होकर रह जाते हैं। और (दूसरी एक दलील और निशानी बअदल–मौत की यह है कि) तुम देखते हो जमीन को सूखी फिर जब हम नाजिल करते हैं इस पर बारिश हो तो वह तरो–ताजा हो जाती है, यह सब इसीलिये है कि अल्लाह की हस्ती ही हक है, और (तुम अपने इन मुशाहिदों से समझ सकते हो कि) वह जिलाने वाला है मुर्दों को, और वह हर चीज पर पूरी तरह कादिर है। और यह कि कियामत जरूर आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं, और अल्लाह तआला जरूर दुबारा जिन्दा करके उठायेगा कब्रों में दफन हुये मुर्दों को। (सूरतुल हज्ज: १–७)

कुरआने–मजीद की इन आयेतों का खुलासा यही है कि "बेसत–बअदल–मौत" (मौत के बाद दुबारा उठाया जाना) के बारे में शक करने वाला, मगर इसको समझने का इरादा रखने वाला इन्सान यदि खुद अपनी पैदाइश में और बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की अपनी इस जिन्दगी की लगातार तबदीलियों में गौर करे, जिन पर इसका कुछ इख्तियार नहीं चलता बल्कि सिर्फ अल्लाह ही के हुक्म से यह तबदीलियां होती है।

और इसी तरह अगर वह जमीन की हालत की तबदीलियों में गौर करे कि एक मौसम में वह बिल्कुल सूखी व बेजान और मुर्दा पड़ी होती है और

उसमें जिन्दगी की कोई रमक और कोई लहर नहीं देखी जाती। फिर जब अल्लाह अपनी रहमत का पानी बरसाता है तो इसी मुर्दा जमीन में से जिन्दगी और शादाबी, सब्जे की शक्ल में उबल पड़ती है-. (अतः इन्सान अगर खुद अपनी हस्ती और अपने पैरों के नीचे वाली जमीन के इन इन्किलाबों (परिवर्तनों) पर एक सच्चे तालिब (इच्छुक) की तरह गौर करे) तो मौत के बाद की जिन्दगी और कियामत के बारे में उसे कोई शक नहीं हो सकता।

और सूरए-रूम में एक जगह फर्माया:-

तर्जमा:- अल्लाह निकालता है जिन्दे मुर्दों से और निकालता है मुर्दे को जिन्दा से और जिन्दगी देता है जमीन को मुर्दगी के बाद (पस जिस तरह दुन्या में अल्लाह की कुदरत से नेस्ती के बाद हस्ती-यानी नास्ति के पश्चात अस्तित्व-और मौत के बाद जिन्दगी का यह सिलसिला जारी है) इसी तरह तुम मरने के बाद कियामत में जिन्दा करके उठाये जाओगे।

और इसी सूरए-रूम में दूसरी जगह इर्शाद फर्माया:-

तर्जमा:- अल्लाह की रहमत के आसार तो देखो वह कैसी ताजा हयात अता करता है, जमीन को उसके सूखने व बेजान और बिलकुल मुर्दा हो जाने के बाद। हाँ-हाँ! बेशक यही अल्लाह दुबारा जिन्दा करने वाला है मुर्दों को और उस को हर चीज पर पूरी कुदरत है। (रूमः ५०)

और सूरए-फुस्सिलत में फर्माया:-

तर्जमा:- और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम देखते हो जमीन को सूखी पड़ी हुयी जिन्दगी के आसार से खाली, फिर जब हम बरसा देते है उस पर पानी, तो वह तरो-ताजा हो जाती है, और फूलती-फलती है, बेशक वहीं कादिरे मुतलक (तनहा कुदरत वाला) जिसने मुर्दा जमीन को यह जिन्दगी बख्शी वही दुबारा जिन्दा करने वाला है मुर्दों को। बेशक वह हर चीज पर कादिर है। (फुस्सिलत (हामीम सज्दा) :३६)

(पृष्ठ १२ का शेष)

(विश्वास) यहां के सामोहिक रूप को प्रभावित किया बेरूनी फतह (बाहिरी विजय) खुवाह कुछ भी बुराइयां लेकर आए उसका एक फाइदा जरूर होता है, यह अवाम (जनता) के जेहनी उफुक (मनोवृत्ति के फैलाव) में विस्तार पैदा कर देती है, और उन्हें मजबूर कर देती है कि वह अपनी सोच के घेरे से बाहर निकलें वह यह समझने लगते हैं कि दुनया इससे कहीं जियादह बड़ी और रंगा रंग है जैसी कि वह समझ रहे थे बिल्कुल इसी तरह अफगान की फतह (विजय) ने हिन्दुस्तान पर असर डाला और बहुत सी तबदीलियां (परिवर्तन) वजूद में आ गई, इससे भी जियादह तबदीलियां उस वक्त जुहूर (प्रकट) में आई जब मुगल हिन्दुस्तान आए क्योंकि यह अफगानों से जियादह सभ्य और उन्नतिशील थे, उनहोंने हिन्दुस्तान में खूसूरियत के साथ उस नफासत (सफाई) को राएज किया जो ईरान का हिस्सा थी।

इस हकीकत का एअतिराफ (स्वीकृति) साबिक सदर कांग्रेस (भूतपूर्व कांग्रेस अध्यक्ष) और जंगे आजादी के एक रहनुमा डा० पटाबी सीता रमय्या ने भी कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन में अपने प्रेसीडेन्ट ऐड्रेस में इन शब्दों में किया:-

"मुसलमानों ने हमारे कलचर को मालामाल किया है और हमारे प्रबंध और व्यवस्था को सुदृढ़ और मजबूत बनाया है और वह देश के दूरदराज इलाकों को एक दूसरे से करीब लाने में कामयाब हुए, इस देश के साहित्य और सामोहिक जीवन में उनकी छाप बहुत गहरी दिखाई देती है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

किया जाऊँ तो क्या मुझसे मेरी खताएं दूर हो जायेंगी। आपने फरमाया, हाँ अगर तुम अल्लाह के रास्ते में अज्र की नीयत से सब्र करो। आगे बढ़ो, पीछे न हटो। मगर कर्ज मुआफ न होगा। मुझसे जिबरील ने यही कहा है।

मुफ्लिस कौन है।

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुम जानते हो मुफ्लिस कौन है? लोगों ने कहा हममें मुफ्लिस वह है जिसके पास न दिरहम हो न कोई सरमाया। आपने फरमाया, मेरी उम्मत में मुफ्लिस वह है जो कियामत के दिन नमाज, रोजे, जकात के साथ आयेगा लेकिन उसके साथ यह भी अिल्लतें होंगी कि फुलाँ को गाली दी है, फुलाँ पर तुहमत लगाई है, फुलाँ का माल खाया है, फुलाँ का खून बहाया है, और फुलाँ को मारा है। पस उसकी बाज नेकी फुलाँ और बाज नेकी फुलाँ को दे दी जायेंगी। अब अगर उसकी सब नेकियाँ खत्म हो गयीं और अदायगी बाकी रही तो फिर इन सबकी बुराइयाँ लेकर उस पर डाल दी जायेंगी, और फिर आग में झोंक दिया जायेगा।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

हज्जतुल वदाअ की तकरीर

हज़्रत नुफैअ बिन अलहारिस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सललम ने फरमाया, जमाना उसी सूरत में आ गया है जैसा कि वह उस दिन था जिस दिन आसमान व जमीन पैदा किये गये थे। और साल बारह महीने का होता है, इसमें चार महीने हुर्मत के हैं: ज़िल्कअ़दा, जिल्हिज्ज, मुहर्रम और रजब, कबील–ए–मुजर का जो जुमाद और शाबान के दर्मियान है। फिर आपने फरमाया, यह कौन सा महीना है। हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल जियाद जानते हैं, आप खामोश हो गये यहां तक कि हमें गुमान हुआ कि आप इसका दूसरा नाम लेंगे। आपने फरमाया, क्या जिल्हिज्जः नहीं हैं। हमने कहा, हां। आपने फरमाया, यह कौन सा शहर है। हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल जियादः जानते हैं। फिर आप खामोश हो गये। हमको ख्याल हुआ कि आप इसका दूसरा नाम लेंगे। आपने फरमाया, क्या यह मक्का नहीं है? हमने कहा हाँ। आपने फरमाया यह कौन सा दिन है। हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल जियादः जानते हैं। आपने फरमाया, क्या यह कुरबानी का दिन नहीं है। हमने कहा हाँ। आपने फरमाया, तुम्हारे खून, तुम्हारे माल और तुम्हारी आबरू तुम पर हराम है, तुम्हारे इस दिन की हुर्मत की तरह इस महीने में और इस शहर में, और अन्करीब तुम अपने रब से मिलोगे। और वह तुमसे तुम्हारे आमाल के मुतअल्लिक सवाल करेगा। सुन लो मेरे बाद काफिर न हो जाना कि तुम में का वाज बाज की गर्दन मारे। सुन लो तुम को चाहिए कि मौजूद गायब को खबर पहुंचा दे शायद वह याद रखने वाला हो उससे। फिर फरमाया, सुन लो क्या मैंने पहुंचा दिया। हमने कहा हाँ। आपने फरमाया, ऐ अल्लाह, गवाह रह।

मुसलमान का हक मार लेने की सजा

हजरत अयास बिन सअलबः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिसने किसी मुसलमान का हक मार लिया तो अल्लाह ने उस पर दोजख वाजिब की और जन्नत हराम की। एक आदमी ने कहा या रसूलल्लाह! अगर मामूली चीज हो। आपने फरमाया अगरचि एक पीलू की लकड़ी हो।

आमिल की खियानत

हजरत अदी बिन अमरह (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना है कि किसी को हम किसी काम पर आमिल बनाये और वह हम से सुई के बराबर भी कोई चीज छुपा लेगा तो वह चोरी है। कियामत के दिन उसी के साथ वह आयेगा। अन्सार के एक काले आदमी ने कहा या रसूलल्लाह! (अदी कहते हैं गोया मैं उन्हीं को देख रहा हूँ) आप अपना काम वापस ले लीजिए। आपने फरमाया तुमको क्या हुआ? कहा मैंने सुना है आप इस–इस तरह फरमाते है। आपने फरमाया, हां मैं अब भी कहता हूं कि जिसको मैं किसी काम पर आमिल बनाऊँ तो थोड़ा बहुत जो कुछ हो वह हाज़िर करे। जो उसको दिया जाये ले ले और जिससे रोका जाये तो उससे बाज रहे।

माले ग़नीमत में चोरी

हजरत उमर (र०) से रिवायत है कि खैबर के दिन सहाबः ने मक्तूलों का जिक्र किया। कहा, फुलाँ शहीद और फुलाँ शहीद। फिर एक मकतूल का नाम लिया और कहा फुलाँ भी शहीद। आपने फरमाया, हरगिज नहीं, उसको मैंने आग में देखा है चादर या अबा के बारे में जिसको उसने चुराया था।

शहादत से भी कर्ज मुआफ नहीं होता

हजरत अबू कतादह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े फरमा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद और अल्लाह पर ईमान अफ्जल आमाल हैं। एक आदमी खड़े हो गये कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप क्या फरमाते हैं। अगर मैं कत्ल किया जाऊँ तो क्या मुझसे मेरी खताएँ दूर हो जायेंगी। आपने फरमाया हाँ। अगर तुम अल्लाह के रास्ते में अज्र की नीयत से सब्र करो। आगे बढ़ो और पीठ न मोड़ो। फिर आपने फरमाया, तुमने क्या कहा? उन्होंने अर्ज किया अगर मैं अल्लाह के रास्ते में कत्ल

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नवीं किस्त

सीरतुन्नबी

ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़लाक

सय्यिद सुलैमान नदवी

एक और आयत में फरमायाः—

तर्जुमाः— और वह लोग कि जब उन पर चढ़ाई हो तब वह बदला लेते हैं। और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है। तो अगर माफ कर दिया और नेकी की तो इसका सवाद देना खुदा पर है। वह ज़ालिमों को प्यार नहीं करता''

सूरः शूरा रूकू—४

आयत के पहले टुकड़े का मतलब यह है कि मुसलमान खुद से किसी पर जुल्म करने में पहल न करें लेकिन अगर कोई उनपर जुल्म करे तो वह इस जुल्म का कानून उतना ही बदला ले सकते हैं जितना उन पर किया गया। क्योंकि कानून यही है कि बुराई का बदला उतनी ही बुराई है जैसा कि तौरात में बयान हुआ है, लेकिन अगर कोई मुसलमान अखलाकन इस जुल्म को माफ कर दे और न सिर्फ माफ ही बल्कि इस बुराई की जगह कुछ नेकी और भलाई भी करे तो उस को खुदा की तरफ से सवाब मिलेगा, और इस को सवाब और बदला देना खुदा पर है।

सारांश यह कि क्षमा और बदले में से किसी एक ही की अपनाना दुनिया की शारीरिक अथवा अध्यात्मिक व्यवस्था का अवगुण है। अगर बदला और सजा का उसूल न हो तो समुदाय की व्यवस्था काइम नहीं रह सकती और न मुल्क में अमन व अमान रह सकता है और न लोगों के बड़े भाग को बुराइयों से बाज रहने पर मजबूर किया जा सकता है। और अगर क्षम का उसूल न हो तो आत्मा की गरिमा और आचरण की पवित्रता कोई चीज न रहे। इसलिये इनमे से किसी एक को लेना और दूसरे को छोड़ देना जीवन व्यवस्था को आधा रखना और आधा मिटा देना है।

इसलिये आँहजरत सल्ल० एक ऐसी तालीम को लेकर आये जिसकी नजर इन्सानी हस्ती की पूरी व्यवस्था पर है। उसने यह कहा कि सजा और बदला को तो समुदाय और हुकुमत के हाथ में दे दिया। और इस हुक्म के साथ दिया कि इसे जारी करने में कोइ रहम न किया जाये और इस में बड़े छोटे, अमीर व गरीब और अपने और गैर में कोई फर्क न किया जाये ताकि जमाअत और मुल्क का निजाम काईम रहे। दूसरी तरफ क्षमा को व्यक्तित्व की पराकाष्ठा का जरिया बताया ताकि लोगों की रूहानी पाकी और अखलाकी बुलन्दी बराबर तरक्की करती जाये।

जमाअती इन्तेजामात के कयाम के लिए सख्ती का यह आलम है कि एक खास सजा जारी करने के समय हुक्म होता हैः—

तर्जुमाः— ''और तुम को अल्लाह का हुक्म चलाने में इन दोनों गुनहगारों पर तरस न आये। अगर तुमको खुदा पर और कियामत पर ईमान है।'' (सूरःनूर रूकून)

अर्थात् इस गुनाह की जो सजा खुदा के यहां है और जो कियामत में होगी, वह इससे कहीं ज्यादा सख्त होगी, इसलिये इस गुनाह की सजा दुनिया ही में दे देना वास्तव में अपने गुनहगार भाई पर एहसान करना है, इसलिए इस सजा के देने में नर्मी न की जाये।

किसी सजा के जारी करने में ऊँचे नीचे और अमीर व गरीब के फर्क न करने का यह हाल है कि एक दफा जब एक शरीफ मुसलमान औरत चोरी के जुर्म में गिरफ्तार हुई और कुरैश ने चाहा कि उस को सजा न दी जाये और इस के लिये आप सल्ल० के पास सिफारिशें पहुचांयी गई,

तो फरमाया, ''ऐ लोगों! तुम से पहले कौमें इसीलिए नष्ट हुई कि जब कोई बड़ा आदमी चोरी करता था तो उसको छोड़ देते थे, और अगर कोई मामूली आदमी उसी काम को करता तो उसको सजा देते। खुदा की कसम! अगर मुहम्मद की बेटी फात्मा रजि० भी चोरी करती तो मै इस के भी हाथ काट लेता।

दूसरी तरफ क्षमा का यह हाल है कि हजरत आयशा रजि० फरमाती है कि ''आँ हजरत सल्ल० ने कभी किसी से अपना जाती बदला नही लिया, सिवाय इसके कि उसने खुदा के किसी हुक्म को तोड़ा है तो उसको (कानून) सजा मिली हो''। यह अमल था, व्यवहार

था। तालीम का हाल यह है कि हजरत अनस रजि० कहते हैं कि "मैंने आपके पास किसास का कोई मुकदमा पेश होते नहीं देखा, लेकिन यह कि इसमें आप सल्ल० ने माफ और दरगुजर करने की सलाह दी। अर्थात किसास के बजाए बिल्कुल माफी या दैत (तावान या खून बहा) लेकर माफ कर देने को फरमाया। मामूली छोटे अपराधों की निस्बत सहाबः से फरमाया, "आपस में गुनाहों को माफ कर दिया करो, लेकिन मुझ तक जब वह केस पहुंचेगा तो सजा जरूर हो जायेगी।" अर्थात जब इस्तेगासा हुकूमत के सामने पेश हो जायेगा तो फिर सजा होना वाजिब है। ताकि हुकूमत का रोब दिलों पर काइम रहे। अतएव एक दफा की घटना है कि एक साहब एक चादर ओढ़े सो रहे थे। एक व्यक्ति ने चुपके से चादर उतार ली। वह पकड़ा गया और अदालते नबवी सल्ल० में पेश किया गया। आप सल्ल० ने हाथ काटने का हुक्म दिया। जिन साहब की चादर थी उन्हों ने आकर अर्ज की "या रसुलल्लाह! क्या तीस दिरहम की एक चादर के लिए एक इन्सान का हाथ काटा जायेगा। मैं यह चादर इसके हाथ उधार बेचता हूं।" फरमाया, मेरे पास लाने से पहले यह क्यों नहीं कर लिया।

यह तो उस क्षमा का हाल है जिसको एक हद तक कानूनी अपराध की सूरत हासिल है और इस लिहाज से कानूने मुहम्मदी सल्ल० मौजूदा सल्तनतों के कानून से ज्यादा नर्म है। ज्यादा न्यायपूर्ण और अधिक समझ में आने वाला है। लेकिन क्षमा की आम अखलाकी तालीम का दायरः इस्लाम में इससे भी अधिक विशाल है।

क्षमा और दरगुजर की तालीम

अखलाक की सबसे भारी और दुश्वारतरीन तालीम जो अधिकतर लोगों पर बहुत शाक गुजरती है' वह क्षमा और दरगुजर, आत्म नियंत्रण, सहनशीलता और बरदाश्त की है लेकिन इस्लाम ने इस पथरीली जमीन को भी बड़ी आसानी से तय किया है। सबको मालूम है कि इस्लाम में शिर्क और बुतपरस्ती से कितनी शदीद नफरत जाहिर की गयी है और खुदा की तौहीद, और बड़ाई की कितनी अपरिवर्तनीय कल्पना उसने प्रस्तुत किया है जो खास इस्लाम का विशिष्ट भाग है, फिर भी मुसलमानों को यह ताकीद की जाती है कि तुम मुशरिकों के बुतों को बुरा भला न कहो। ऐसा न हो कि वह चिढ़ में तुम्हारे खुदा को बुरा भला कह बैठे।"

तर्जुमाः— "और जिनको यह मुशरिक अल्लाह के सिवा पुकारते हैं उनको बुरा न कहो कि वह अल्लाह को बेअदबी से नादानिस्तः बुरा कह बैठे।" (सूर अनआम रूकू१३)

यह सहनशीलता की कितनी इन्तेहायी तालीम है। पैगम्बर को सम्बोधन हुआ कि कुफ्फार और मुशरिकीन के जुल्म व सितम और गाली गलौज पर सब्र करो और उनको क्षमा करो और इसी की पैरवी का हुक्म आम मुसलमानों को हो रहा है।

तर्जुमाः— क्षमा करने की आदत पकड़ और नेक काम को कह और जाहिलों से किनारा कर और अगर तुम को शैतान की कोई छेड़ उभार दे (अर्थात क्रोध आ जाये) तो खुदा की पनाह पकड़ वह है सुनता, जानता।" (सूरः एराफ रूकू२४)

सुकून की हालत में क्षमा व दरगुजर आसान है। मगर जरूरत है कि इन्सान गुस्सः में भी बेकाबू न होने पावे। सहाबः की तारीफ में फरमायाः— तर्जुमाः " और जब गुस्सः आये जब भी वह माफ कर देते हैं।" शूरा—४

नेकूकारों की तारीफ में एक और जगह यह फरमाया गया कि अपने गुस्सः को दबाना और माफ करना खुदा का प्यारा बनने का जरियः है।

तर्जुमाः "और जो गुस्सः को दबाने वाले और लोगों को माफ करने वाले हैं, और अल्लाह अच्छे काम करने वालों को प्यार करता है।"

(सूरः आले इमरान रूकू—१४)

बदला की क्षमता होने और समर्थ होन के बावजूद दुश्मन को माफ कर देना बहुत बड़े साहस का काम है। फरमायाः—

तर्जुमाः— और अलबत्ता जिसने बरदाश्त किया और माफ किया तो वह बेशक हिम्मत के काम हैं।" (शूरः रूकू—४)

इस सहनशीलता और क्षमा को 'वही' मुहम्मदी सल्ल० ने अपने शब्दों में "अज़्म" कहा है जो खास नबियों के गुण में आया है। फरमायाः—

तर्जुमाः— "और बरदाश्त कर जिस तरह हिम्मत और अज्म वाले पैगम्बरों ने सहन किया।" (अहकाफ रूकू—४)

नेकी के फैलाने और बदी के रोकने में एक मुसलमान को हर प्रकार का दुख सहन करना चाहिऐ कि यह बड़ी हिम्मत का काम है। फरमायाः—

तर्जुमाः— "अच्छी बात बता और बुरी बात से रोक ओर जो तुम पर पड़े उसको सहार ले कि यह हिम्मत के काम हैं।" (लुकमान—२)

कुफ्फार और मुशरिकीन की बदगोइयों की और उन की लाई हुई मुसीबतों को सहन कर लेना भी बहादुरी है, फरमायाः—

तर्जुमः और अगर सब्र करो और *तकवा इख्तियार* करो तो यह बड़े हिम्मत के काम हैं। (आले इमरान—१६)

ऊपर की तमाम आयतों में सब्र, बरदाश्त, सहनशीलता, और क्षमा व दरगुजर को बड़ी हिम्मत और नैतिक साहस का काम बल्कि खुदा का प्यारा होने का कारण बताया गया और मुसलमान को इस पर अमल करने की दावत दी गयी है। इस से आगे बढ़कर देखिये कि निम्न आयत में ईमानवालों को दुश्मनों को भी क्षमा करने का हुक्म दिया गया हैः

तर्जुमः (ऐ पैगम्बर) ईमान वालों से कह दो कि उनको जो लोग अल्लाह की तरफ से आने वाले अजाब के दिनों से बेपरवाह हैं, क्षमा कर दें।" (जासियः२)

जाहिर है कि यह वही काफिर हैं जो काफिर व मुशरिक हैं, अब देखिये कि काफिर व मुशरिक के खिलाफ इस्लाम को जो दुराव है इसके बावजूद मुसलमानों को यह ताकीद की जाती है कि वह इनको क्षमा करें और उनकी खताओं से दरगुजर करें। क्या इससे ज़्यादा इस्लाम से किसी नर्मी का मताल्बः है। अल्लाह मुसलमानों की सीख की खातिर इस क्षमा व दरगुजर और माफी को अपना खास गुण बताकर उनको अपनी पैरवी की तलक़ीन फरमाता हैः—

तर्जुमा : "और किसी नेकी के काम को खुले तौर पर करो या छिपाकर करो या किसी बुराई को माफ करो तो यह मुसलमान की शान है क्योंकि ख़ुदा माफ करने वाला, कुदरत वाला है।" (निसा—२१)

अर्थात जब पापियों और बदकारों (कुकर्मियों) को क्षमा करना खुदा की सिफत है तो बन्दों में भी यह सिफत दिखाई पड़नी चाहिए। कुरआन कहता है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान होने के बावजूद माफ करता है तो इन्सान जिसकी कुदरत सीमित है, और जो आजिज़ है उसको तो बहरहाल क्षमा ही करना चाहिए। फरमायाः—

तर्जुमः "और चाहिए कि क्षमा करें और दरगुजर करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम को माफ करें। अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।" (सूनःनूर—३)

बुराई की जगह नेकी।

क्षमा व दरगुजर के बाद इस से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि जो बुराई करें, न सिर्फ यह कि उसको क्षमा करो बल्कि उसके साथ भलाई करो और जो अदावत रखे उसके साथ सदव्यवहार करो। अल्लाह की इस तालीम पर अमल करने वालों का नाम खुदा ने "बड़ा खुश क़िस्मत" रखा है और बताया है कि दुश्मन को दोस्त बना लेने की यह बेहतरीन तदबीर है। फरमायाः—

तर्जुमः "नेकी और बदी बराबर नहीं, तो बुराई का जवाब बेहतरी से दे, फिर देख कि वह जिसके और तेरे बीच दुश्मनी है वह ऐसा हो जायेगा जैसा नातेदार दोस्त और यह बात उन्ही को हासिल होती है जो बरदाश्त (सब्र) रखते हैं और जिसकी बड़ी किस्मत है।" (हामीम सज्दः५)

फिर दूसरी जगह फरमाया मुशरिकों और काफिरों के तानों का बुरा न मानो। क्योंकि दीनी मामले में भी गुस्सा से कोई बेजा हरकत कर बैठना शैतान का काम है। अगर ऐसा मौका पेश आये तो खुदा से दुआ मांगनी चाहिए कि वह शैतान के फन्दे से बचा ले। फरमायाः—

तर्जुमः "मुशरिकों की बुराई का जवाब भलाई से दे, हम जानते हैं जो वह कहते है, और कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मैं शैतानों की छेड़ से तेरी पनाह चाहता हूं और ऐ रब इस से पनाह मांगता हूं कि वह मेरे पास आयें।" (मोमिनून—६)

एक और आयत में अल्लाह ने नमाज़, खैरात, सब्र और दरगुजर का जिक्र फरमाया है और इन कामों के बदले में जन्नत का वायदा किया है मगर इन तमाम नेकियों में सब्र का उल्लेख दो बार आया है। फरमायाः—

तर्जुमाः— "और जो लोग उसको जोड़ते हैं जिसके जोड़ने का हुक्म उनको अल्लाह ने दिया है (अर्थात एक दूसरे का हक) और अपने रब से डरते हैं और हिसाब के बुरे अंजाम से खौफ खाते हैं और जो अपने परवरदिगार की खुशी के लिए सब्र करते हैं, और नमाज अदा करते हैं और हमने उनको जो रोज़ी दी उसमें से छिपे और खुले खैरात करते हैं और बुराई के बदले भलाई करते हैं, उन्हीं के लिए है पिछला घर, हमेशा रहने के बाग़।"

(सूरःरअद—३)

उन से कहा जायेगाः—

तर्जुमः "तुम पर सलामती हो इसके बदले में कि तुम ने सब्र किया। सो खूब मिला पिछला घर।"

आप ने देखा कि जन्नत की इस खुशखबरी में न तो नमाज़ का

जिक्र है न खैरात का और न खुदा के खौफ का। सिर्फ एक सब्र के बदले की खुशखबरी है। यह भी मालूम हुआ कि बुराई के बदले नेकी करना ऐसी महत्वपूर्ण चीज है कि नमाज और ज़कात जैसे फ़राइज़ के साथ साथ इसका भी ज़िक्र किया जाये। एक और आयत में नव मुस्लिम यहूदियों को अपने विरूद्ध अपने सजातियों से जो दुखदायी ताने और आरोप सुनने पड़ते हैं। और वह इस पर सब्र करते हैं, उसकी तारीफ की गयी है कि इस्लाम के असर से अब उनका यह हाल हो गया है कि वह बुराई की जगह भलाई करते हैं। फरमायाः—

तर्जुमः— "वह लोग सब्र के कारण अपना हक़ दोहरा पायेंगे, और वह बुराई का जवाब भलाई से देते हैं, और हमारा दिया कुछ खैरात करते हैं, और जब कोई निकम्मी बात सुनते हैं तो उस से दरगुजर कर लेते हैं और कह देते हैं कि हमारे लिये हमको बेसमझों से मतलब नहीं।" (सूरःकसम रूकू—६)

सही बुखारी में है कि आँहज़रत सल्ल० ने फरमाया कि, "क़राबत का हक अदा करने वाला वह नहीं हैं जो एहसान के बदले में एहसान करता हो बल्कि वह है जो दुर्व्यवहार पर सद्व्यवहार करता हो"। एक दफा एक सहाबी ने आकर अर्ज़ की कि, "ऐ खुदा के पैग़म्बर! मेरे कुछ रिश्तेदार है जिनके साथ मैं तो सुलूक करता हूं मगर वह बदसुलूकी करते हैं मैं नेकी करता हूं और वह बदी करते हैं, मैं दरगुजर करता हूं और वह जिहालत करते हैं।" आप सल्ल० ने फरमाया, "अगर ऐसा ही है जैसा तुम कहते हो तो तुम उनके मुंह में मिट्टी भर रहे हो," अर्थात नेकी के लुक्मा से उनका मुंह बन्द कर रहे हो, और जब तुम इस रविश पर काइम रहोगे खुदा की मदद शामिल रहेगी।" हुजैफः रजि० कहते हैं कि आप सल्ल० ने फरमाया," तुम हर एक के पीछे न चलो, तुम कहते हो कि अगर लोग तेरे साथ भलाई करेंगे तो हम भी करेंगे, और अगर वह जुल्म करेंगे तो हम भी करेंगे, यह नहीं बल्कि अपने को पुरसुकून रखो। लोग तुम्हारे साथ भलाई करें तो भलाई करो अगर बुराई करें तो भी जुल्म न करो।"

वह लोग जो इस्लाम और मुसलमानों को अपनी फरेबकारियों झूठे वायदों, खियानत काराना समझौतों और पुरफरेब सुलहों से धोखा दिया करते थे उनके बारे में भी आप सल्ल० को यही हिदायत हुई।

तर्जुमः "और इनमें से कुछ को छोड़कर, औरों की किसी न किसी खियानत से तू हमेशा अवगत होता रहता है, तो उनको क्षमा कर और उनके कुसूर से दरगुजर कर कि अल्लाह नेकी करने वालों को पसन्द करता है।" (माइदा—रूकू—३)

(पृष्ठ ३१ का शेष)

जिस दुर्वेश, जिस इमाम जिस मुजद्दिद के साथ आप को अकीदत है उसी के साथ दूसरों को भी अकीदत होनी चाहिए? कब्र में हर मुसलमान से सुवाल सिर्फ उसके ईमान सिर्फ उसके अकीद—ए—रिसालत से मुतअल्लिक होगा, या ये भी होगा कि फुलाँ फुलाँ अशखास के मुतअल्लिक किया राय थी? आप के सामने एक साफ, कुशादा, हमवार सीधी और रोशन सड़क मौजूद है उसे छोड़ कर तंग व तारीक ना हम्वार, और टेढ़ी पकडनडियों पर चलना और कांटों में अपना दामन उलझाना, क्या ये भी कोई दानिश मन्दी व खुश फहमी है। (तामीरे हायात) (अन्वादक अब्दुल वकील)

विलादत शरीफ़

हज़रत मौ० अब्दुश्शककूर (रह०)

जनाब सय्यिदुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुन्या में तशरीफ़ लाना एक अज़ीमुश्शान वाक़िआ है कि ग़ैर मुस्लिम लोग भी इस की अज़मत व अहम्मीयत का इनकार नहीं कर सकते और हम मुसलमान लोग तो इस को अल्लाह की क़ुदरते कामिला का बेहतरीन नमूना एअतिक़ाद करते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : मैंने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत ही के लिए पैदा किया है। मअलूम हुआ कि मख़्लूक की पैदाइश का मक़्सद (उद्देश्य) इबादते इलाही है। यूं तो तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम इबादते इलाही के मुअल्लिम हैं, मगर हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जैसी मुकम्मल तअलीम इबादते इलाही की दी ऐसी किसी से ज़ाहिर न हुई चुनांचि आप के दीन को दीने कामिल कहा गया पस आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ज़ाते अक़्दस मक़्सूदे आफ़रीनिश इबादते इलाही की बुन्याद हुई लिहाज़ा आप की पैदाइश का मक़्सदे अस्ली होना अच्छी तरह ज़ाहिर हो गया।

शेर शाह सूरी और अकबर

के ज़माने में ज़मीन का सुधार और कानून

मौ० सै० अबुल हसन अली हसनी

आराजी (जमीन) के लगान और जाएदाद की पैमाइश वग़ैरह के निजाम (व्यवस्था) में मुसलमान बादशाहों ने ख़ासतौर पर सुधारत्मक काम किये और क़ानून बनाए। फ़ाइनेन्स ख़ास तौर पर क्रन्सी बनवाने में जो क़ीमती सुधार हुए उससे पहले भारत वर्ष बिल्कुल नावाकिफ़ था, कानून साजी और आफिस व्यवस्था में शेरशह सूरी को कमाल हासिल था, उसकी पैरवी (अनुकरण) अकबर ने अपने जमाने में की।

समाज कल्याण के काम:—

जानवरों की देखभाल और उनकी नसलों की तरक्की में भी मुस्लिम हुकोमतों को कमाल हासिल था, जहांगीर की तुजक और दूसरी तारीखी किताबों "आईने अकबरी" वग़ैरह में यह चीज़ तफ़सील से मिलेगी। अस्पतालों और मुहताज खानों के कियाम (स्थापना) और बाग़े आम्मा, तफरीह गाहों, बड़ी बड़ी नहरों और बड़े बड़े तालाबों की तअमीर (निर्माण) मुस्लिम हुकोमतों का कारनामा है।

मौलाना सय्यद अब्दुल हई (रह०) ने अपनी बेनजीर (अनुपम) किताब "जन्नतुल मशरिक" में इस्लामी अहद (काल) के हिन्दुस्तान के शिफाखानों (अस्पतालों) रिफाहे आम (समाज कल्याण) और तअमीरी मन्सूबों (निर्माणिक योजनाओं) की लंबी लिस्ट दर्ज की है।

हिन्दुस्तान के पूरबी और पच्छिमी हिस्सों को मिलाने वाली लंबी लंबी सड़कें भी मुसलमान बादशाहों की बनवाई हुई हैं, उनमें सबसे मशहूर सड़क शेरशाह सूरी की बनवाई हुई सड़क है, जो इस वक्त के बंगला देश के आख़िरी हुदूद (अन्तिम सीमा) सुन्नार गांव से लेकर पाकिस्तान में सिन्ध के मक़ाम "नीलाब" तक जाती है, इस सड़क की लंबाई तीन हजार मील या चार हजार आठ सौ बत्तीस (४८३२) किलोमीटर है, हर तीन किलोमीटर या दो मील पर एक मुसाफ़िर ख़ाना होता था, जिसमें एक लंगर हिन्दुओं के लिए और दूसरा मुसलमानों के लिए होता था, साथ ही एक मस्जिद भी हर दूसरे मील पर बनाई गई थी, जिसके मुअज़्ज़िन हाफिज और इमाम मुकर्रर थे, हर मुसाफिर खाने में पैगाम रसानी (सन्देश भेजना) और डाक के लिए तेज़ रफ़्तार दो घोड़े रहते थे। जिनकी मदद से रोजाना लाब की खबरे बंगाल की दूरदराज सरहद (सीमा) तक पहुंचाई जाती थी, सड़क के दोनो ओर फलदार दरख्त थे, जिनका फल और साया मुसाफिरों के लिए बेशबहा नेअमत (अमूल्य प्रदान) थी।

रहने सहने के तरीकों में सफाई सुथराई और विस्तार

मुसलमानों ने हिन्दुस्तान को साफ सुथरा पाकीज़ा (पवित्र) और खाने पीने की चीजों में ख़ुश ज़ौकी (सुन्दर रूचि) उसूले सेहत (स्वास्थ्य नियम) में पाबन्दी मकानों को हवादार और रौशन बनाने का तरीका और क़िस्म क़िस्म (भांति भांति) के खाने पीने के बरतनों से भी आशना (परिचित) किया, इससे पहले भारती लोग बड़ी बड़ी दअवतों में पेड़ों के पत्तों पर खाना रखकर खाते थे और आज भी इसका दस्तूर कहीं कहीं बाक़ी है। लेकिन मुलसमानों ने यहां के समाज, यहां की घरेलू जिन्दगी और घरों की आरइश और जेबाइश में एक इन्किलाबे अजीम (महान परिवर्तन) पैदा कर दिया, उन्होंने जदीद फन्ने तअमीर (नवीन निर्माण कला) भी ईजाद (अविष्कार) किया जो सन्जीदगी, लताफत, हुस्न और तनासुब (गंभीरता, स्वच्छता, सुन्दरता और सन्तुलन) देश के प्राचीन निर्माण कला से प्रतिष्ठित था, ताजमहल फन्ने तअमीर के अजूब–ए–रोज़गार (अदभुत) नमूने की हैसियत से उस अहदे जर्री (गोल्डन पीरियड) की याद ताज़ह करता रहेगा।

सभ्यता और संस्कृति पर गहरे प्रभाव:

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने **Discovery of India** में हिन्दुस्तानी समाज, हिन्दुस्तानी फिक्र (सोच) और हिन्दुस्तानी सभयता और संस्कृति पर मुसलमानों के नाकाबिले फरामोश (न भुलाए जाने वाले) असरात (प्रभाव) का एअतिराफ़ (स्वीकृति) करते हुवे लिखा है:—

"हिन्दुस्तान में इस्लाम की और मुखतलिफ (विभिन्न) कौमों की आमद ने जो अपने साथ नए ख़्यालात और ज़िन्दगी के मुख़तलिफ तर्ज़ (विभिन्न पद्धित) लेकर आई, यहां के अक़ाएद

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आखिरी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

सुल्तान महमूद द्वितीय

महमूद ने अलमबरदार मुस्तफा को, जिसकी कोशिश से यह सारा इन्क़लाब हुआ था, अपना प्रधान मंत्री बनाया। और सुल्तान सलीम के फौजी सुधार को फिर जारी कर दिया। इनकशरिया ने फिर बगावत की और प्रधान मंत्री अलमदार मुसतफा को कत्ल कर दिया मजबूरन सुल्तान ने सुधार वापस ले लिया। रूस ने फिर चढ़ाई की और बलपूर्वक दूसरी प्रतिज्ञा पत्र (मुआहिदा) लिखाया जिसके बाद तुर्की का काफी भाग उसके कब्जे में चला गया। यह देखकर यूनान ने भी हाथ पैर निकाले और इंगलिस्तान, रूस और फ्रांस की मदद से जंग शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि यह भी तुर्कों के हाथों से निकल गया। अल जजाएर पर फ्रांस का कब्जा हो गया। सरबिया रूस की सहायता से आजाद हो गया। हालत दिन प्रतिदिन खराब होने लगी इस आम तबाही के जमाने में अरब एक किरन फूटी और आस बन्धी कि अब फिर दुन्या का नूर (प्रकाश) संसार के कोने कोने में फैल जाएगा याद रहे कि अरब कुछ न थे लेकिन इस्लाम के असर से उन्हीं अरबों ने चन्द वर्षों में दुन्या को हिलाकर रख दिया। बाद को अब्बासियों के जमाने में ऐसी सूरत पेश आई कि वह धीरे धीरे हुकूमत से अलग हो गए। उस के बाद से वह अलग ही रहे। धीरे धीरे उनसे धार्मिक प्रभाव भी कम होने लगा और शिर्क, बिदअत और दूसरी बुराईयों में लिप्त हो गये। उस जमाने में वहां एक बुजुर्ग शेख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब (रह०) पैदा हुए। उन्हें यह दशा देखकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने ख्याल किया कि किसी प्रकार दीनी रंग फिर पैदा हो जाए तो यही अरब संसार में फिर उजाला फैला सकते हैं। यह सोचकर उन्होंने उपदेश और नसीहत शुरू की। कुछ ही दिनों की कोशिश से अरबों में फिर दीनी सरगमी और मजहबी जोश पैदा हो गया। और अल्लाह व रसूल के नाम पर जीवन बलिदान करने लगे और यह तो आप जानते ही हैं कि इस्लाम का ऐसा प्रभाव है कि उस पर अमल करते ही दीन दुन्या में हर प्रकार की उन्नति के द्वार खुल जाते हैं। चुनानचिः अब भी वही हुआ और वही जाहिल जंगली बद्दू ऐसी उन्नति कर गये कि उन्होंने ने नज्द में अपनी एक अच्छी खासी हुकूमत काइम कर ली। इसके बाद सारी दुन्या को उसी रंग में रंग ने के लिए आगे बढ़े। सबसे पहले मक्का, मदीना का रूख किया क्योंकि यही मुसलमानों के केन्द्र थे। अगर यहां सुधार हो जाए तो फिर सारा संसार दुरूस्त हो जाए। चुनानचिः उन्होंने हिजाज पर कब्जा कर लिया। इस के बाद इराक और शाम की तरफ बढ़े। अब सुल्तान को खटका हुआ कि कहीं यह लोग सारी सल्तनत पर कब्जा न कर लें। अतः इराक के हाकिम को लिखा कि इनका मुकाबला करें लेकिन उस से कुछ न हो सका तो इराक, शाम और जद्दा के हाकिमों से मिलकर मुकाबला करना चाहा लेकिन सफलता न हो सकी। अब सुल्तान महमूद ने मिस्र के सूबेदार मुहम्मद अली या शाह को आदेश भेजा और कहा कि सफलता के बाद नज्द का क्षेत्र भी उसके अधिकार में दे दिया जाएगा। मुहम्मद अली पाशा ने बहुत जोर लगाया लेकिन जब तक नज्दियों का सरदार सऊद बिन अब्दुल अजीज जिन्दा रहा कुछ न हो सका सऊद के मरने के बाद नज्दी सरदारों को रूपया देकर मिला लिया। इस प्रकार अरबों की प्राजय हुई। उनका सरदार अब्दुल्लाह बिन सऊद पकड़कर कुसतुनतुनिया भेजा गया जहां वह कत्ल कर दिया गया। उसके बाद मुहम्मद अली पाशा की हिम्मत बहुत बढ़ गई। मिस्र पर तो उसका कब्जा था ही अब शाम का भी इरादा किया। कई लड़ाईयां हुईं। आखिर रूस की सहायता से यह लड़ाइयां समाप्त हुई लेकिन मुहम्मद अली को मिस्र और उसके बेटे इबराहिम पाशा को क्रेट द्वीप का हाकिम बनना ही पड़ा।

इनकशारी फौज के बारे में तो बताया जा चुका है कि कैसे शरीर और सरकश थे। वह सुधार के बड़े विरोधी थे क्योंकि उसमें उनकी हानि थी। सुल्तान सलीम को इसी वजह से तख्त

से उतारा, सुल्तान महमूद के प्रधानमंत्री अलमदार मुस्तफा को इसीलिए कत्ल किया। मजबूरन सुल्तान महमूद कुछ दिन के लिए रूक गया था। लेकिन सुधार आवश्यक ही था। सुल्तान ने फिर इरादा किया कि उन्हें जारी करे लेकिन इनकशारियों ने फिर विरोध किया। वजीरों और सरदारों का क्या जिक्र है खुद शाही महल लूट लिया। सुल्तान के कत्ल में कोई कसर न रह गई थी। लेकिन ठीक उसी समय एक उपाय सूझ गया। याद होगा कि जब तर्कों को खिलाफत मिली थी तो उसके साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चादर तलवार अलम (झण्डा) भी मिला था। उस समय जब सुलतान महमूद बिल्कुल घिर गया तो हुजूर सल्ल० के इस झण्डे को निकाला उसे देखकर लोग बहुत बड़ी संख्या में जमा हो गये। सुलतान ने उनकी सहायता से इनकशारी फौज को कत्ल कराया। फिर तमाम प्रांतों से उन को निकालने का आदेश भेज दिया। इस तरह इस सरकश और बेकाबू फौज से छुट्टी मिली।

सन् १२५५ हि० में सुलतान महमूद का देहांत हो गया। टरकी टोपी उसी के जमाने से निकली।

सुल्तान अब्दुल मजीद प्रथम

सुल्तान महमूद के बाद उसका बेटा अब्दुल मजीद बादशाह हुआ। रूस से तो बराबर लड़ाई रहा ही करती थी। उस जमाने में भी एक जंग हुई लेकिन थोड़े ही दिन बाद सुलह हो गई जिसमें अनातूलिया का किला कबरस तुर्कों को दिया गया और तुर्की का एसिया स्टोपोल रूस को मिला। हाकिमे मिस्र मुहम्मद अली पाशा के बारे में पढ़ चुके हैं। सुल्तान अब्दुल मजीद के जमाने में फिर मुकाबला हुआ। आखिर मे मिस्र को हुकूमत हमेशा के लिए मुहम्मद अली और उसकी औलाद को दे दी गयी। सन् १२७७ हि० में सुल्तान की मृत्यु हो गयी।

सुल्तान अब्दुल अजीज

अब्दुल मजीद के बाद उसका भाई अब्दुल अजीज तख्त पर बैठा उसके समय में अली पाशा सदरेआजम (प्रधानमंत्री) था। उन्होंने बहुत अच्छा इंतेजाम किया। फौज दुरूस्त की। बेढ़ को ऐसी तरक्की दी कि दुन्या में दूसरे नम्बर पर समझा जाने लगा। लेकिन उनके मरते ही वही खराबियां शुरू हो गयीं। कुछ दिन लोगों ने सब्र किया लेकिन जब सुल्तान की लापरवाही का वही हाल रहा तो सरदारों ने आपस में सलाह करके उसे तख़्त से उतार कर कैद कर लिया जहां उसने आत्म हत्या कर ली।

सुल्तान मुराद पंजुम (पंचम), सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय

सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ के बाद १२९३ हि० में सुल्तान अब्दुल हमीद प्रथम का लड़का मुराद तख्त पर बैठाया गया लेकिन एक ही हफते के बाद दिमाग खराब हो गया। तीन महीने तक इलाज होता रहा लेकिन जब हालत ठीक न हुई तो मजबूरन उसके दूसरे भाई अब्दुल हमीद द्वितीय को तख्त पर बैठाया गया।

यह जमाना बड़ा ही कठोर था। सल्तनत की साख गिर चुकी थी, चारो तरफ दुश्मनों का जोर था। खुद देश के अंदर गड़बड़ी मची हुई थी। इसी औसर पर मुदहत पाशा, अनवर बे, और शौकत पाशा की देख रेख में संवैधिन शासन (दस्तूरी हुकूमत) पर जोर देना शुरू हुआ। आखिर सुल्तान ने मजबूर होकर उसे स्वीकार कर लिया लेकिन उसके बाद भी यूरोप का वही रवय्या रहा। रूस तो हमेशा से दुश्मन था अब फिर उसने चढ़ाई की और रूसी फौजें पलूना तक आगई लेकिन गाजी उसमान पाशा ने बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। रूस की प्राजय होने ही वाली थी कि एक लाख फौज और आ गई। गाजी उसमान पाशा के सिर में गोली लगी और गिरिफ्तार हुए। ज़ारे रूस के सामने पेश हुए तो उसने कहा कि अगर तुम्हारी तलवार रूस के खिलाफ कभी न उठे तो तुम छोड़ दिये जाओ। शेरे पलूना (गाजी उस्मान पाशा) ने उत्तर दिया कि अगर सुल्तान का आदेश होगा तो एक बार नहीं हजारों बार यही तलवार आपके खिलाफ उठेगी। ज़ारे रूस पर इसका बहुत असर हुआ और उस ने उसे यूंही छोड़ दिया। किसी प्रकार लड़ाई समाप्त हुई लेकिन उस जंग में तर्कों को बड़ा नुकसान पहुंचा और काफी मुल्क उनके हाथ से निकल गया।

रूस के अतिरिक्त कुर्स पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और मिस्र को अपनी निगरानी में ले लिया। बेचारे एराबी पाशा ने बड़ा जोर लगाया लेकिन कुछ न हो सका। सूडान के लिए मेहदी सूडानी ने जान तोड़ कोशिश की। पहले अंग्रेजों की प्राजय हुई लेकिन आखिर में लार्ड किचनर ने कब्जा कर ही लिया। बेचारे मेहदी की कब्र उखड़वाई गई हड्डियां तक निकाल कर फेंक दी गई। ट्यूनिस पर फ्रांस ने कब्जा कर लिया मुल्क की यह हालत देखकर १३२८ हि० में लोगों ने सुल्तान

अब्दुल हमीद को तख्त से उतार दिया।

सुल्तान मुम्मद पंचम

सुल्तान अब्दुल हमीद के बाद १३२८ हि० (१९०६ इ०) में उसके भाई मुहम्मद को तख्त पर बैठाया गया। उस समय न फ़ौज की दशा ठीक थी न देश का प्रबन्ध ठीक था और न खजाने में कुछ बाकी था। इस कमजोरी के कारण इटली ने तराबलस पर कब्जा कर लिया। अभी यह कहानी समाप्त नहीं हुई थी कि बलकान की लड़ाई शुरू हो गई और कोशिश हाने लगी कि तुर्की को यूरोप से निकाल दिया जाए। उस समय मुसलमानों में बड़ा जोश पैदा हो गया। हमारे हिन्दुस्तान में भी पहले तराबलस और फिर बलकान के मामले में बड़ा जोर और काफी हलचल रही। स्व० मौलाना शिब्ली ने एक बड़ी जोरदार नज्म लिखी। मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना अबुल कलमा ने अपनी पुर जोश तकरीरों (भाषणों) और दिल दहला देने वाले लेखों से सारे भारत में आग लगा दी। लाखों रूपयों की सहायत के अतिरिक्त घायलों की देखरेख और इलाज और मरहम पट्टी के लिए डा० अंसारी के साथ साथ कई आदमी रवाना हुए जिन्होंने बड़ी मेहनत से मरीजों और जखमियों की सेवा की।

जर्मन युद्ध या महायुद्ध

बलकान की लड़ाई समाप्त हुई थी कि सन् १३३३ हि० (१९१४ ई०) में जर्मन युद्ध प्रारम्भ हुआ उस समय दशा कुछ ऐसी थी कि १३३६ हि० में अपनी मर्जी के विरूद्ध इस लड़ाई में शरीक होना पड़ा। लड़ाई हो ही रही थी कि सन् १३३६ हि० में सुल्तान मुहम्मद पंचम का देहान्त हो गया।

सुल्तान अब्दुल वहीद

मुहम्मद पंचम के बाद सुलतान अब्दुल वहीद तख्त पर बैठे १० अगस्त १९१८ ई० (१३३६ हि०) को जर्मनी ओर उसके साथियों की प्राजय हुई। तुर्क भी जर्मनी के साथ थे इसलिए उन पर भी इसका असर पड़ा और सारी सल्तनत ही खत्म कर दी गई। अंग्रेजों और उनके साथियों ने सारा राज्य आपस में बांट लिया, हिजाज़, इराक और फिलिस्तीन अंग्रेजों ने ले लिया। शाम फ्रांस के कब्जे में आया। ऐशिया–ए–कोचक यूनान को मिला और कुसतुनतुनया और खाड़ी सबकी मिल्कियत करार पायी केवल नाम के लिए तुर्को को बाकी रखा।

देखने से यह मालूम होता था कि तुर्क हमेशा के लिए समाप्त हो गया लेकिन अल्लाह तआला ने अपना फ़ज़्ल (दया) किया। नौजवान तुर्क मुसतफा कमाल पाशा, रऊफबे, डा० अदनान आदि किसी तरह बच कर निकल आए और थोड़ी सी फौज जमा करके जंग शुरू कर दी। खलीफा अब्दुल वहीद से इत्तिहादियों ने आदेश लिखवाया कि मुसतफा कमाल पाशा आदि बाग़ी हैं और क़त्ल के योग्य हैं लोगों ने जो यह दशा देखी तो एलान कर दिया कि हम न अब्दुल वहीद को खलीफा मानते हैं न उसकी हुकूमत सही हुकूमत है। इसके बाद लड़ाई जारी रही। आखिर खुदा की मेहरबानी से उन लोगों को सफलता प्राप्त हुई। यूनान की प्राजय हुई, और सारा एशिया–ए–कोचक फिर तुर्कों के कब्जें में आ गया। २२ अक्टूबर १९२३ को कुसुनतुनया पर भी कब्जा हो गया। सुलतान अब्दुल हमीद भाग कर अंग्रेजों की पनाह में मालटा चला गया।

सुल्तान अब्दुल मजीद द्वितीय

अब्दुल वहीद के देहान्त के बाद सुल्तान मजीद खलीफा बनाया गया लेकिन सल्तनत के सारे अधिकार मुसतफा कमाल को दे दिये गये। हुकूमत जमहूरी (लोकतांत्रिक) हो गई और मुसतफा कमाल उसके सदर (राष्ट्रपति) करार पाए।

मुसतफा कमाल

मिस्र के अब्बासी खलीफा के बारे में बताया जा चुका है कि यूं तो वह खलीफा और पद में बादशाह रहे बड़े लेकिन अधिकार बिल्कुल न थे। यही हाल सुल्तान अबदुल मजीद का था कि बना तो दिये गये खलीफा लेकिन सारे इन्तेजीमी अधिकार मुसतफा कमाल के पास थे। कुछ दिन यह शकल चलती रही। लेकिन चन्द महीनों के बाद यह पद बेकार और कष्टदायी समझ कर तोड़ दिया गया और खलीफा की धार्मिक हैसियत भी समाप्त हो गयी। सुल्तान अब्दुल मजीद देश से निकाल दिये गये और यूरोप जाकर स्विटजरलैण्ड मे रहने लगे। हैदराबाद और भोपाल राजयों से कुछ धन आवन्टित हो गया जिस से उनका गुजारा होता है। सन् १९३१ में निजाम हैदराबाद के बेटे शाहजाद आज़म और शाहजादा मोअज्जम यूरोप गए। सुल्तान अब्दुल हमीद की राजकुमारियों दुर्रेशाहवार और अज़ीज़ा निलोफर से उनकी शादी हो गई और यह राजकुमारियां विदा होकर भारत आ गईं।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : टी०वी० देखना जाइज़ है या नहीं?

उत्तर : टी०वी० पर दीनी प्रोग्रामों का देखना या सुनना जाइज़ है, और गन्दे प्रोग्रामों का देखना हराम है, लेकिन देखने में यह आता है कि आदमी नाजाइज़ बातों से बच नहीं पाता, इसलिए जहां तक मुम्किन (सम्भव) हो बचा जाए। (मुफ़्ती मु० तारिक़ नदवी)

टी०वी० की ख़बरें वग़ैरह सुनना और होने वाले हादिसात (घटनाएं) देखना भी जाइज़ है। लेकिन क्या तदबीर की जाए कि शैतानों की चालों से बचा जा सके, सभी दीनदार जानते हैं कि टी०वी० पर ऐसे प्रोग्राम्स कुछ ज़ियादा ही होते है जिनसे बचना दीन दार लोग ज़रूरी समझते हैं। उससे आगे बढ़कर ब्लू फ़िल्में भी टी०वी० पर देखी जाती हैं। इन तमाम बातों से एक दीनदार टी०वी० से दूर रहने ही में अपनी आफ़ियत समझता है। काश कि जिस दीनदार, घर में टी०वी० होता वह एक ख़ास जगह पर मुक़फ़्फ़ल रहता और वह घर के दीनदार कन्ट्रोलर मर्द या औरत की निगरानी ही में खोला जाता तो घर के लोग टी०वी० के फ़ाइदों से फ़ाइदा उठा सकते और उसकी बुराइयों से बच सकते। वर्ना इस दौर में बच्चो, बच्चियों, औरतों, नवजवानों को बेराह करने वाला सबसे बड़ा ज़रीआ (साधन) टी०वी० है। नाजाइज़ तअल्लुकात में इज़ाफ़ा, बे पर्दगी, सनीमा और टी०वी० की देन है।

प्रश्न : किसी इन्सान की जान बचाने के लिए कोई शख़्स अपना गुर्दा उसे दे सकता है या नहीं?

उत्तर : नहीं दे सकता है इसलिए कि इन्सान अपनी जान का मालिक नहीं है। अतः आज़ादी से अपने जिस्मानी अअ़ज़ा (शारीरिक अंगों) को जो चाहे करे इसका उसको हक़ नहीं है। इस में इन्सान की इहानत (अपमान) है। पवित्र क़ुर्आन में है कि (हम ने मानव को प्रतिष्ठित किया है।)

प्रश्न : एक औरत के पास दस तोला सोने का ज़ेवर है वह उसे पहनती नहीं है, बस रखे रहती है। कया उस पर उस सोने की ज़कात है?

उत्तर : हनफ़ी मस्लक में, ज़ेवर चाहे पहना जाए या रखा रहे, अगर ज़कात के निसाब भर का है तो उसकी ज़कात अदा करना पड़ेगी। सोने का निसाब साढ़े सात तोला (८७ ग्राम) है जबकि चान्दी न हो, लेकिन अगर सोना और चान्दी दोनो हों औरदोनों की क़ीमत इतनी हो जिस से ६१२ ग्राम या उससे ज़ियादा चान्दी खरीदी जा सके तब भी ज़कात का निसाब पूरा हो जाएगा।

प्रश्न : नमाज़े जनाज़ा में शरीक होने के लिए नफ़्ल नमाज़ तोड़ी जा सकती है या नहीं?

उत्तर : जब यह डर हो कि नफ़्ल नमाज़ पूरी करेंगे तो नमाज़े जनाज़ा न मिल सकेगी तो नफ़्ल नमाज़ तोड़ दे और जनाज़े की नमाज़ में शरीक हो जाए, फिर वक़्त मिलने पर जो नफ़्ल नमाज़ नीयत के बअ़द तोड़ी है उसे पढ़ लें। अल्बत्ता फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हों तो नमाज़े जनाज़ा के लिए न तोड़े।

याद रखना चाहिए कि जब मस्जिद में फ़र्ज़ नमाज़ के ख़त्म पर एअ़लान हो कि नमाज़े जनाज़ा पढ़ना है तो चाहिए कि नफ़्ल नमाज़ों की नीयत न की जाए। बअ़ज़ मस्जिदों में एअ़लान होता है कि सुन्नतों के बअ़द नमाज़े जनाज़ा है। ऐसी सूरत में भी चाहिए कि सुन्नते मुअक्किदा पढ़ ले नफ़्ल की नीयत न करें पहले नमाज़े जनाज़ा पढ़ें।

प्रश्न : जुमे (जुमुअ़े) के ख़ुत्बे के वक़्त बच्चों को शरारत से रोक सकते है या नहीं?

उत्तर : उंगली और हाथ के इशारे से रोका जा सकता है ज़बान से कुछ न कहें, इसलिए कि उस वक़्त ज़बान से बोलना जाइज़ नहीं है। अलबत्ता ख़तीब (खुत्बा देने वाले) को जाइज़ है।

प्रश्न : अगर ज़कात के पैसों से कपड़ा या ग़ल्ला ख़रीद कर मुस्तहिक़ को दिया जाए तो ज़कात अदा होगी या नहीं?

उत्तर : अदा हो जाएगी।

(इन सभी उत्तरों में तामीरे हयात में छपे मुफ़्ती मुहम्मद तारिक़ साहब नदवी के जवाबों से मदद ली गई है।)

आप अपने प्रश्न स्वच्छ, स्पष्ट तथा पन्ने के एक ओर लिखा करें।

दुरूद शरीफ़ के मसाइल

शैख़ुल ह़दीस मौ० मुह़म्मद ज़करीया (रह़०)

मसअला : उम्र भर में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है। दुरूद शरीफ़ फ़र्ज़ होने का हुक्म क़ुर्आने मजीद में स० २ हिज्री में नाज़िल हुआ था।

मसअला : अगर एक मजलिस (स्थान) में कई बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम लिखा जाए तो तह़ावी (रह़०) का मज़हब यह है कि हर बार नाम लेने वाले और सुनने वाले पर दुरूद पढ़ना वाजिब है लेकिन जिस पर फ़त्वा दिया गया है वह यह है कि जब एक ही मजलिस में कई बार हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का नामे नामी आए तो (आख़िर में) एक बार दुरूद पढ़ना वाजिब है और हर बार दुरूद पढ़ना मुस्तह़ब है। (वल्लाहु अअ़्लमु बिस्सवाब)

मसअला : नमाज़ में सिवाए तशह्हुदे अख़ीर के और किसी रूक्न में दुरूद शरीफ़ पढ़ना मक्रूह है। (दुर्रे मुख़्तार)

मसअला : जब ख़ुत्बे में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का नामे नामी आए या ख़तीब दुरूद वाली आयत पढ़े तो सुनने वाले अपने दिल में ज़बान हिलाए बिना "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" कह लें। (दुर्रे मुख़्तार)

मसअला : बे वुज़ू दुरूद शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है और बावुज़ू दुरूद पढ़ना "नूरून अ़ला नूर" अर्थात बहुत ही अच्छा है।

मसअला : अल्लाह के नबियों और फ़िरिश्तों (उन पर अल्लाह का सलाम हो) के अ़लावा किसी और पर सीधे दुरूद शरीफ़ न पढ़े अलबत्ता हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पीछे किसी मुस्तह़िक़ को बढ़ा कर दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं। जैसे यह न कहें "अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला आलि मुहम्मद" बल्कि यूं कहें "अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव अ़ला आलि मुह़म्मद" (दुर्रे मुख़्तार)

बरेलवी आ़लिम अह़मद यार ने भी इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को लिखने बोलने से मना लिखा है अलबत्ता ताबिअ़ करके दुरूद में आलिही लाना चाहिए। (शाने हबीबुर्रिह़मान पृ० १५६)

मसअला : जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का मुबारक नाम लिखें तो साथ में सलात व सलाम भी लिखें अर्थात नाम के साथ "अ़लैहिस्सलातु व स्सलाम "या सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" पूरा लिखे इसमें कोताही न करें। सिर्फ़ (स०) या (सल०) ना लिखें।

एक शख़्स ह़दीस शरीफ़ लिखता और कंजूसी से नामे मुबारक के साथ दुरूद शरीफ़ (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) न लिखता उसके हाथ में अक्ला रोग लग गया और उसका हाथ गल गया।

शैख़ इब्ने ह़जर मक्की (रह़०) ने नक़्ल किया है कि एक शख़्स नामे मुबारक के साथ सिर्फ़ "सल्लल्लाहु अ़लैहि" लिखता था "व सल्लम" न लिखता, उसने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को ख़्वाब में यह फ़रमाते हुए देखा कि तू अपने को चालीस नेकियों से क्यों मह़रूम (वंचित) रखता है? अर्थात व सल्लम में चार ह़र्फ़ (अक्षर) है, हर ह़र्फ़ पर एक नेकी और हर नेकी पर दस गुना सवाब इस तरह् "व सल्लम" पर चालीस नेकियां हुईं।

बेहतर यह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का जिस्म और उसके कपड़े पाक व साफ़ हों।

मसअला : आपके नामे मुबारक से पहले "सय्यिदिना" बढ़ाना मुस्तह़ब और अफ़्जल है।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिंव अ़ला आलिही व अस्ह़ाबिही व बारिक व सल्लिम।

दूसरी किस्त

हिन्दोस्तान में दीनी मदरसों का दौर

मौ० अब्दुल करीम पारीख

मौलाना अली मियां (रह० अ०) की एक तकरीर और यू०पी० के मुख्य मंत्री बहुगुना साहब

१६७५ की बात है हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी साहब (रह० अ०) ने नदवतुल उलमा लखनऊ में इन्टरनेशनल कानफरेंस बुलाई थी। उस में अरब मुल्कों और अरब हुकूमतों के प्रतिनिधि भी आए थे। इस अवसर पर तकरीर करते हुए अरबों की ओर संकेत करते हुए आम मुसलमानों से कहा था कि यह सोने की चिड़ियां उड़ जाएंगी। हम आम मुसलमानों के चार आने आठ आने, रूपया, दो रूपया के चन्दे से इंशाअल्लाह अपना मदरसा चलाएंगे। हम तो इस जलसे से यह बताना चाहते हैं कि मदरसे की तालीम यह है और यह इसकी लाईफ द जिन्दगी है। हमारे इदारे से मिस्र "अल अज़हर" यूनिवर्सिटी का भी सम्बन्ध रहा। सऊदी अरब की बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटीयों का संबन्ध रहा। हमारे लड़के वहां जाकर पढ़ते और वहां के लड़के यहां आकर तालीम हासिल करते हैं। आज कितने ही मदरसे ऐसे हैं जिनका मैं किसी दर्जे में जिम्मेदार भी हूं। इंडोनेशिया के 'जावा' के 'सुमात्रा' के बल्कि अरब मुल्कों के भी लड़के हिन्दुस्तानी मदरसों में पढ़ने के लिए आते है। यह हिन्दुस्तान की शान है या इसकी बेइज्जती है? यह मौलाना अली मियां साहब (रह० अ०) की तकरीर के शब्द हैं। इस जलसे में यू०पी० के मुख्यमंत्री हेमवती बहुगुना भी मौजूद थे।

गंगाराम के लिए सीट खाली छोड़ी

फिर यह देखिये कि मदरसे में बाज़ बाज़ होशियार लड़के होते हैं जो अरबी भाषा पर अच्छी दक्षता (मलका) प्राप्त कर लेते हैं। उनको अरबी बोलचाल और अरबी में लिखना आ गया, अरबी टाइपिंग और कम्प्यूटर सीख लिया। किसी प्रकार दिल्ली पहुंच गये। दिल्ली में अरब मुल्कों के पचासो दूतावास हैं। उस में उन को आसानी से नौकरी मिल जाती है और किसी किसी को दूतावास वाले बाहर अपने अपने मुल्कों में मुलाजमत के लिए भेज देते हैं। मदरसे से पढ़े हुए इस लड़के को अगर हजार रियाल नौकरी के मिलते हैं। यह बहुत छोटी बात है। लेकिन वह तो दस दस पन्द्रह पन्द्रह हजार रियाल महाना कमाने वाले हो जाते हैं। हिन्दुस्तानी सिक्के के हिसाब से देखा जाये तो मदरसे से पढ़े यह लड़के एक महीने में एक लाख से दो लाख रूपया तक कमा लेते हैं, कोयत, दुबई, बहरैन, सऊदी अरब, ब्रुनाई आदि में मदरसे से पढ़े हुए इस लड़के को नौकरी मिल जाती है तो वहां से वह अपने देश हिन्दुस्तान को "फारेन करेंसी" भी भेजता है जबकि हिन्दुस्तान का न पानी पी रहा है और न खाना खा रहा है और यहां हिन्दुस्तान में अपने एक वतनी भाई गंगा प्रसाद के लिए खाली सीट भी छोड़ता है। तो अब मुझे कोई बताए कि इस मदरसे के लड़के न अपने देश हिन्दुस्तान को लाभ पहुंचाया या हानि? यह बात सोचने की है।

कशमीर और अयोध्या की बिजली मदरसों पर क्यों गिराई जाए?

मैं इस रूख पर भी बात करूंगा कि हमारे अखबार वाले भाई भी और कुछ राजनीतिक पार्टियां भी जो बाबरी मस्जिद की वजह से हमें कुछ तीखी नजरों से देखते हैं। मैं इनमें से किसी का पक्षधर नहीं हूं। मुसलमानों ने भी गलत नारे लगाए, सड़कों पर धरने दिये, जलूस निकाले और हमारे हिन्दु भाइयों ने भी यही कुछ किया। इसलिए यह समस्या और भी पेचीदा होकर उलझ गई। अयोध्या या कशमीर के कारण बेगुनाह मदरसों और शिक्षा संस्थानों को निशाना बनाना, उन पर इल्ज़ाम लगान सही नहीं है। अब वह बेचारे इस पोजीशन में नहीं हैं कि सब के सामने अपनी बेगुनाही बयान कर सकें और बहुतों को तो मालूम ही नहीं है कि उनके खिलाफ देश में क्यो प्रोपगेण्डा हो रहा है। एक तो यह नाच गाने से बचने के लिए न रेडियो सुनते हैं न टी०वी० देखते हैं और विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र और मैगजीन भी नहीं पढ़ते। उनको मालूम नहीं कि बाहर क्या हो रहा है और उनके खिलाफ कौन सी अफवाह फैलाई जा रही है और इन बेचारे अफवाह फैलाने वालों

को भी मदरसों के बारे में कुछ मालूम नहीं हैं कि मदरसा क्या है और उस में क्या होता है? बस सुनी सुनाई मनगढ़ंत बात कह देते हैं और लिख भी देते हैं। इसलिए मैं ने जरूरी समझा कि मैं खुलासा करू आपके सामने कि अभी इस समय हिन्दुस्तान में लगभग सात लाख मस्जिदें हैं। मस्जिदों में भी छोटे छोटे मदरसे लगते हैं। मुहल्ला पड़ोस के छोटे बच्चे शाम सुबह आकर पढ़ते हैं और अपने घर चले जाते हैं और उनके अतिरिक्त छोटे बड़े मदरसों की व्यवस्था अलग से भी है। वह अपना खर्च खुद से निकालते हैं आम मुसलमानों के चन्दे के सहारे से। खर्च और आमदनी का हिसाब भी रखते हैं। जिसे आप मदरसे में जाकर देख भी सकते हैं और देखते भी हैं। सरकारी आडीटर्स से हिसाब का आडिट भी कराते हैं।

किसी भी मदरसा, मस्जिद में आतंकवाद का कोई सवाल ही नहीं

हां मदरसे के अन्दरूनी बाज चीजें ऐसी जरूर हैं जिनके लिए हम कहते सुनते रहते हैं। जैसे खाने पीने का इंतेज़ाम अच्छा हो, अध्यापकों की तनख्वाहें अच्छी हों। साफ सफाई अच्छी से अच्छी हो। सौचालय, बाथ रूम अच्छे हों। बच्चों की तालीम तर्बियत, पढ़ाई लिखाई पर जोर दिया जाए लेकिन किसी भी मदरसा या मस्जिद के अन्दर कोई आतंकवादी केन्द्र या कोई ऐसा काम हो रहा हो जो हिन्दुस्तान या हिन्दुस्तानी जनता के फायदे के खिलाफ हो ऐसा कुछ नहीं है और न ही मेरी निगाह में है। यदि किसी की निगाह में ऐसा मदरसा, या मस्जिद हो तो वह अगर मुझे ले जाए तो हम उस मस्जिद या मदरसे को ढा देंगे। एक बार नागपुर के एक बड़े आदमी ने अखबार में छापा कि नागपुर से ६४ मील की दूरी पर एक मस्जिद है जो आतंकवादियों का अड्डा है और वहां बम बनाने का कारखाना है। यह खबर पढ़कर मैं उनके दफ्तर में गया कि आप चलिये मेरे साथ। अव्वल तो ६४ मील पर कोई मस्जिद या मदरसा है नहीं। यदि हो तो हम देख लेते हैं और जुर्म साबित हो जाने पर हम उन की ईंट से ईंट खुद मुसलमानों से बजवा देंगे। वह कहने लगे मौलाना! आप कह रहें है तो नहीं होगा और मैं आप की बात सच मानता हूं और रिर्पोटर से गलती हो गई होगी बिना जांच के इस समाचार को छाप दिया। मैं इसका खण्डन (तरदीद) छाप दूंगा। दूसरे दिन समाचार पत्र में खण्डन आ गया कि नहीं ऐसी कोई बात नहीं लेकिन जो बदनामी हो गई कि सड़क पर किसी को गाली दी जाए और गली में माफी मांगी जाए तो उस से अच्छा तो यह होता कि समाचार बिना जांच के छापा न जाए।

हीरे मोती को पत्थर साबित किया जाए।

मैं तो कहूंगा सिखों से, हिन्दुओं से, जैनियों से, आर.एस.एस. वालों से कि आप पढ़े लिखें समझदार लोग हैं। हम से मिलें और बताएं कि किस मदरसा और मस्जिद के अन्दर आतंकवादी रहते हैं। हमारे साथ चलकर वहां घंटा दो घंटा बैठकर देखें कि क्या हो रहा है। इस औसर पर मैं यह भी कहूंगा कि खुद हमारे आलिमों की भी गलती है कि वह मदरसा के पास पड़ोस में रहने वाले हिन्दु भाईयों को मदरसा में अक्सर बुलाते नहीं। पढ़े लिखे समझदार आदमी हैं कोइ वकील साहब हैं, कोई कारपोरेशन के मेमबर हैं किसी अखबार के जिम्मेदार हैं उन से सम्बन्ध रखें। उनको अपने यहां बुलायें। उनके यहां जाएं! एक दूसरे को देखें दिखाए। मगर वह दर्वाजा खोल कर कम निकलते हैं। यह हमारे आलिमों के बेफिक्री जरूर है लेकिन अब इंशा अल्लाह इसका सुधार कर रहे हैं कि हिन्दुओं में जो समझदार और जिम्मेदार लोग हैं उन्हें किसी औसर पर मदरसे में बुलाया जाए। वह अध्यापकों से भी मिलें, पढ़ने वाले बच्चों से भी मुलाकात करें। जब मिलेंगे तो उन्हें मदरसे के यह लोग हीरे मोती दिखाई देंगे।

फिर भी एक बात में खुले दिल से कहता हूं अपने हिन्दू भाइयों से कि वह अपने इलाके में जहां भी रहते हैं वह मदरसे वाले से मेलजोल रखें और मदरसे के आलिमों और जिम्मदार से भी कहता हूं कि वह अपने इलाके, पास पड़ोस में रहने वाले हिन्दु भाइयों से संबन्ध रखें।

मैं मदरसे वालो और उनके आस पास रहने वाले हिन्दू भाइयों से अपील करता हूं कि अरबी मदरसों का वजूद कोई ढकी छुपी बात नहीं है। यही हाल मस्जिद का भी है कि पांच वक्त अज़ान व नमाज़ होती है। अजान सुनकर ईमान वाले मस्जिद में आते हैं जमाअत के साथ नमाज पढ़कर अपने घरों को चले जाते हैं।

नसीहत और बन्दगी

फिर मुसलमानों में हर जगह दस फीसदी भी नमाजी नहीं है। मुम्बई में अलहमदुलिल्ला नमाजियों की संख्या काफी है। हुकूमत के लिए क्या मुश्किल

है कि कोई सी०आई०डी० या कोई जिम्मेदार चुपके से मस्जिद में आ जाए और देख ले कि मस्जिद में क्या हो रहा है। कहां क्या है और कहां आतंकवादी छुपे हुए हैं और कहां पर आतंकवादियों का शिविर चल रहा है? मस्जिद में आम जुमा के दिन खुतबा (धार्मिक भाषण) देने के लिए एक छड़ी के सिवा कुछ नहीं पाऐंगे। तीन चार पैरी का एक मेम्बर होता है। इस पर चढ़ कर इमाम जुमा के दिन उपदेश देता है। बाकी पानी है, लोटे हैं, बधने हैं, पानी वजू और तहारत का इंतेज़ाम है। मुसल्ले और चटाईयां भी बिछी हुई हैं मस्जिद में आप जाएंगे तो दिल पर अच्छा असर होगा। हां यह जरूर कहूंगा कि मस्जिद में जाने से पहले पिशाब किये हो तो पानी से पिशाब की जगह धो लें। औरत से लगे हों तो अच्छी तरह नहा धोलें फिर जाकर बैठें और जो देखना हो देखें।

बेसिर पैर का झूठा आरोप

अरबी मदरसों के बारे में एक तरफा बातें कही जाती हैं जो लगभग सब बेसिर पैर की होती हैं। बुहतान (झूठे आरोप) वाली बातें होती हैं जिसे संस्कृत में लानक्षन कहते हैं। मुसलमानों की ऐसी अक्सरीयत **Mejority** जो इस उप महाद्वीप में इण्डोनेशिया के बाद सबसे बड़ी संख्या में हैं जो हिन्दुस्तान में बसते हैं और हिन्दुस्तान ही को अपना वतन मानते हैं इनके बारे में भरोसा होना और उन पर विश्वास न करना, सुनी सुनाई खबरें या फिर जान बूझकर अफवाहें फैलाकर उनका हौसला घटाने से देश की हानि होगी। मैं आप से यह प्रार्थना करूंगा कि देश के बाज बड़े मदरसों में मेरा आना जाना होता है। बाज़ मदरसे तो आप को ऐसे मिलेंगे जिसके हाते में गवर्मेंट आफ इण्डिया के बैंक की ब्रांच भी खुली हुई हैं। हजारों लड़के पढ़ते हैं। उनके भी एकाउन्ट रहते हैं। अध्यापक और कर्मचारी भी हैं। राह चलते लोग भी वहां आकर पैसे जमा करते हैं, चेक भुनाते है। ड्राफ्ट आदि बनवाते हैं और पोस्ट आफिस से टिकट आदि भी लेते हैं। जब मदरसों के दरवाजे हर एक के लिए दिन भर खुले हों, वहां आतंकवादियों के अड्डे और केन्द्र हो सकते हैं। (जारी)

(पृष्ठ २६ का शेष)

मुसलमानों में सबसे प्रसिद्ध और विख्यात विद्वान हजरत अमीर खुसरो की रचनाओं में हिन्दी भाषा के शब्द कसरत के साथ पाये जाते हैं इस से भी उस युग में हिन्दी के विकास का अन्दाजा होता है। सारांश यह है कि हिन्दुस्तान में एक लम्बी अवधि तक मुस्लिम शासकों की हुकमरानी का कारण उनकी उच्च सैन्य योग्यता नहीं थी बल्कि इस देश के पुराने वासियों के साथ उनकी वह उदारता थी जिस से उस समय के राजा महाराजा भी एक दम वंचित थे। वह इस देश में विजेता की हैसियत से जरूर आये लेकिन उन्होंने इस देश के वासियों के साथ तअस्सुब व तंगनजरी से काम नहीं लिया। न सिर्फ यह कि उनकी जान और उनके माल की हिफाजत की, उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचने दिया बल्कि उनहें अपनी हुकूमत के उच्च तथा महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थापित किया।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू, लखनऊ दिनांक १८ दिसम्बर २००६ से साभार)

प्रस्तुतिः एम०हसन अंसारी

(पृष्ठ २२ का शेष)

साथ सदियों से होती चली आयी है।

इन पंक्तियों को लिखकर हमने अपने और अपने भाई बहनों के हाथ में आईना दे दिया है जिसमें वह अपनी तस्वीर देख सकते हैं। यह चित्र समय की शिला पर पिछले साठ साल में गर्दिशे अय्याम ने बनाई है। हाल ही में इस तस्वीर में रंग उस कमेटी ने भरे हैं जो अपने अध्यक्ष के नाम पर सच्चर कमेटी कहलाती है। और जिस ने समाज शास्त्र और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों की मदद से इस तस्वीर को नोक पलक दी है। आप देख ही रहे है कि इस तस्वीर का चेहरा जो कभी ताबनाक (गरिमामय) था अब दाग़दार है। दमकते चेहरे पर दाग़ है। अद्धसाक्षर और अनपढ़ होने का, गरीबी का, नैतिक पतन का, कम हिम्मती का, नाइत्तेफ़ाक़ी का, गन्दगी का, मनमुटाव का। इस में से कुछ पर प्रकाश डाला है सच्चर कमेटी ने। इकबाल ने कारण इन दागों का ढूंढ निकाला है।

और है तेरा शेआर आईने मिल्लत और है,

जिश्त रूई से तेरी आईना है रूस्वा तेरा।

सच्चर कमेटी ने जो आईना (दर्पण) मिल्लत के हाथों में दे दिया है वह ताजियान–ए–इबरत (शोचनीय) है मुसलमानों के लिए और बाइसे शर्म है एक लोकतांत्रिक हुकूमत के लिए। घाटे के प्रतिपूर्ति की कोशिश दोनों को करना चाहिए।

(उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ २२ दिसम्बर २००६ से साभार)

प्रस्तुतिः एम० हसन अंसारी

आइना क्यों न दूं कि तमाशा कहें जिसे?

सैयद हामिद

मैंने अपने एक लेख में सच्चर कमेटी की संस्तुतियों का उल्लेख करते हुए यह कहा था कि भूतकाल (माज़ी) में हुकूमत ने अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिये जो योजना या प्रोग्राम बनाये वह ज्यादातर कागज पर रह गये। जिम्मेदारी इस बेअमली की हुकूमत और उसके अहलकारों पर जाती है। या मुसलमानों और उनकी कयादत (नेतृत्व) पर जिन लोगों की भलाई के लिये कोई प्रोग्राम बनाया जाये वह खुद उससे फायदा न उठायें तो इसे महरूमी और गफलत के अलावा क्या कहेंगे। घोल कर तो कोई पिलाने से रहा। उन प्रोग्रामों की कामयाबी के लिए जो सच्चर कमेटी की संस्तुतियों पर आधारित हो यह जरूरी है कि अलग अलग स्तर पर उनका लेखा जोखा किया जाये। ऐसा लेखा जोखा जो जारी रहे। प्लानिंग की शब्दावली में इस प्रक्रिया को मानीटरिंग कहते हैं। इस बार हुकूमत ने यह भी महसूस किया है कि प्रोग्रामों के कार्यान्वयन (अमल) के लिए विभिन्न स्तरों पर इनकी मानीटरिंग जरूरी बल्कि अपरिहार्य है। अतएव प्रधानमंत्री ने अपने संशेधति पन्द्रनुकाती प्रोग्राम के लिए जो हाल ही में बनाया गया है, मानीटरिंग की व्यवस्था की बात की है। और यह बात भी मान ली गयी है कि इस मानीटरिंग में हुकूमत के पदाधिकारियों के अलावा जनता के विश्वसनीय प्रतिनिधियों को भी शामिल किया जायेगा। मानीटरिंग पर जोर सच्चर कमेटी की संस्तुतियों में भी दिया गया है। और सम्भावना यह है कि इस रिर्पोट की संस्तुतियों (सिफारिशात) पर जो फैसले किये जाने हैं उनकी प्रभावी मानीटरिंग का बन्दौबस्त भी किया जायेगा। न किया जाये तो हम करवा के छोड़ें। अपने हुकूक तलब करने के लिए ऐसे ही तेवर दरकार होंगे।

मानीटरिंग के लक्ष्य पर केवल वह प्रोग्राम न होंगे जो मुसलमानों अथवा पिछड़े अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए जारी किये गये हैं। निगरां निगाह उन प्रोग्रामों पर भी रखनी चाहिए जो धार्मिक भेदभाव और अन्तर के बिना सर्वसाधारण के लिए जारी किये गये हैं। दरअसल इन अवामी प्रोग्रामों की पहुंच अल्पसंख्यकों के लिए सुनिश्चित प्रोग्रामों से बहुत अधिक है। कुछ भी हो सूचना पहुंचाने और हुकूक तलब करने का जहां तक तअल्लुक है यह काम लोग कर सकते हैं। इस अन्दाज से नहीं जो ज़िद पैदा कर दे। बल्कि इस अन्दाज से जो प्रभावित करे और कायल करे और जहां कहीं मुमकिन हो दिलों को मोह ले। इस काम के लिए लाव लश्कर और ताम झाम की जरूरत नहीं है। आम शहरों में दो या तीन शिक्षित और बाखबर व्यक्ति मिल बैंठें, रिर्पोट को और उसकी सिफारिशात के तहत पास किये गये अहकामात और प्रधानमंत्री के संशोधित पन्द्रह सूत्रीय कार्यक्रम को खंगाल डालें और इन प्रोग्रामों का एक खुलासा बना कर, जो प्रोग्राम मुसलमानों के लिए लाभदायक हों उनका सारांश बनाकर शहर व गांव में प्रसारित कर दें, मुश्तहिर कर दें। खुलासा का निचोड़ यह बतायेगा कि सरकारी संस्थाओं से सम्पर्क करने और काम लेने के आदाब और इमकानात क्या हैं। यह सारा काम अधिक साधनों का मताल्बा नहीं करता। जरूरत है थोड़े से इखलास (निष्ठा) और जरा से ईसार (त्याग) की। बहुत आसान तरीका तो यह होगा कि हर शहर में गली पर खुलने वाला एक कमरा, किसी खाते पीते व्यक्ति केसहयोग से, लिया जाये, उसमें पड़ोस के घरों से जमा करके एक रोज पुराने दैनिक समाचार पत्र रख दिये जाये। दो वालन्टियर्स हों जो इस कमरे में बारी बारी ब्लेक बोर्ड पर खबरें लिख दिया करें जो तालीम और रोजगार के इमकानात को सामने लाती हों और बैंक से कर्जा लेने के उपाय बताती हों इस तरह बेखबरी और उदासीनता का वह शिकंजा टूट जायेगा। जिसने हमारी महरूमियों पर मुहर लगा दी है। पाठकों को शायद मालूम हो कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने हाल ही में हमदर्द एजुकेशनल सोसाइटी के माध्यम से एक किताबचा तैयार किया है जिसमें उन स्कीमों का जिक्र है जो अल्पसंख्यकों के लिए सरकार ने जारी की है। इस पुस्तिका से फायदा क्यों न उठाया जाये?

कहने का यह कल्पना भी कर ली जाय कि मुल्क की फिजा एक लख्त बदल जायेगी और सरकारी ओहदेदारान और अहलकार पुराने मनमुटाव (कदूरतों) या उदासीनता

बरतने को भूलकर अल्पसंख्यकों की इमदादी स्कीमों को व शैक के साथ लागू करंगे लेकिन ऐसा होता नहीं है। गुबार देर से बैठता है, सहल इनकारी की आदत आसानी से नहीं छूटती। अमला की कारगुजारी एक बड़ी हद तक हमारी बेदारी और निगहदारी पर निर्भर होगी। हर जिला या हर शहर में कुछ लोग जिन पर अवाम का भरोसा हो अवाम की भलाई में दिलचप्सी लेना शुरू करें और जहां कहीं भी उन के हुकूक और उन की भलाई की स्कीमों से उन को वंचित रखा जाये वहीं वह स्थानीय पदाधिकारियों का ध्यान उस तरफ दिलायें और अगर वह भी ध्यान न दें। तो एक स्तर ऊपर तक बात पहुंचायें। यह सब कुछ करने के लिए संगठन की जरूरत होगी। ब्लाक और तहसील के बाद जिला और रियासत के स्तर पर समस्या के समाधान के लिए विश्वसनीय और दर्दमन्द व्यक्तियों को पहले से सुनिश्चित कर लिया जाए। हम यह सब कहते हुए यह मानकर चल रहे हैं कि हमारी शिकायतें लोकतांत्रिक ढंग से सुनी जायेंगी। और समस्योओं का समाधान होकर रहेगा। इस राह पर चलकर देखियें, इस अन्देशे के साथ कि ठोकरें खानी पड़ेगी राह से पत्थर हटाने पड़ेंगे और इस उम्मीद के साथ कि अन्ततः इन्साफ होकर रहेगा। शर्त है सब्र, लगन, संगठन, हक तलबी और धैर्य।

जिन बुजुर्गों के हाथ में मुसलमानों की रहनुमाई है उन को तामीरी (रचनात्मक) और फलाही (सुधारात्मक) कामों को जीवन का लक्ष्य बना लेना चाहिए। उनका यह फर्ज है कि अवाम को उनके अधिकारों तथा उन सुविधाओं से आगाह करें जो क्रमशः भारत के संविधान और उसकी केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने उन्हें दी है और जहां उनमें कोताही हो वहीं सम्बन्धित सरकारों से कहें और अगर फिर भी सुनवाई न हो तो जनमत के दबाव को काम में लायें। क्या अजब कि हमारे रहनुमाओं (मार्गदर्शकों) में से कुछ को खुदा यह तौफीक दे कि रचनात्क और सुधारात्मक कार्यों को प्राथमिकता देना शुरू कर दें कि उनकी निजात और मुल्क व मिल्लत की आफियत इसी में हैं आप कहेंगे कि नफ्सी, नफ्सी, स्वार्थ और व्यावसायिक दृष्टिकोण के इस युग में मजजूब की इस बड़ को कौन सुनेगा? सोचिये कि अगर बदगुमानी (कुधारणा) से शुरूआत की जाये तो कोई काम कभी पूरा न हो।

सबसे बड़ा काम, सबसे बड़ी मांग यह है कि तालीमी कमी को दूर, तालीम खसारे को पूरा किया जाये। हुकूमत ने पचपन जनपदों को मुसलमानों की माकूल तादाद के जिले करार दिया है, इन जनपदों की सूची इजाफा तलब है। नवीनतम जनगणना के अनुसार इनमें अभिवृद्धि की जाय। इसके अतिरिक्त मताल्बे किये जाएं कि उन ब्लाकों को भी इस सूची में शामिल किया जाये जहां मुसलमानों की आबादी का अनुपात २५ प्रतिशत से अधिक है। इसके बाद नक्शा लेकर बैठा जाये और प्राथमिक विद्यालयों की जहां जहां कमी हो उसे भरा जाय। सर्वशिक्षा अभियान की योजना से मुसलमानों को अभी तक फायदा बहुत कम पहुंचा है। और आंगनबाड़ी स्कीम से इस से भी कम। इन स्कीमों के सिलसिले में स्टाफ से जोर देकर कहना चाहिए कि इस कमी को दूर करें और इन प्रोग्रामों की कृपादृष्टि मुसलमानों की ओर मोड़े।

यह बात आमतौर से स्वीकार की जाती है कि मुसलमान व्यवसायियों के हाथ में हुनर है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ट्रांसफर होता रहा है। दुख इसका है कि देश ने जहां तक इसको विकास योजनाओं का सम्बन्ध है, इस बहुमूल्य पूंजी की तरफ यथोचित ध्यान नहीं दिया अतएव टेकनीकल शिक्षा में सबसे अधिक वंचित मुसलमान ही रहे। उन्हें टेक्नीकल तालीम का लाभ उनकी आवश्कतानुसार पहुंचना चाहिए इसके लिए अनिवार्य शैक्षिक योग्यता में रियात करनी होगी। सच्चर कमैटी ने तजवीज की है सुझाव दिया है किय योग्यता मैट्रिक के बजाये मिडिल या कक्षा ८ कर दी जाय। सिफारिश बजा है। लेकिन फिर भी कारीगरों के बहुत से बच्चे स्कीम से लाभान्वित न हो सकेंगे इन बच्चों के लिए एक अलग स्कीम बनानी होगी जो कारीगरों के उन बच्चोंपर लागू हो जिन्होंने पढ़ाई चौथी कक्षा के बाद या उससे भी पहले छोड़ दी है। टेक्नीकल तालीम (प्राविधिक शिक्षा) के साथ साथ उन्हें सामान्य शिक्षा के वांछित सौपानों से गुजारा जाय। यह काम कोई ऐसा कठिन भी नहीं है। दिन को ट्रेनिंग और शाम को तालीम, यह सम्मेलन सम्भव भी है और लाभदायक भी। राष्ट्रीय उपज (प्रोडक्टीविटी) में इस से अभिवृद्धि होगी और कारीगरों का हुनर, हौसिला और हैसियत भी इस तरह बढ़ जायेगी। इस प्रकार उस नाइन्साफी का भी एक हद तक निराकरण हो जायेगा जो इस हुनरमन्द तब्क़ः के

(शेष पृष्ठ २० पर)

ज़िक्रे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

अबू मर्गूब

(१)

हम्दोसना ख़ुदा की जिस ने जहां बनाया
कैसी ज़मी बनाई क्या आस्मां बनाया
शम्सो क़मर बनाकर या रौशनी अता की
और रात को भी उसने क्या पुर सुकूं बनाया
ख़िल्क़त में सबसे अफ़्ज़ल इन्सान को बना कर
अफ़्ज़ल में सबसे अशरफ़ आख़िर नबी बनाया
लाखों दुरूद उनपर लाखों सलाम उनपर
लाउं मैं ज़िक्र उनका अब दिल को है ये भाया
जब ज़िक्र उनका आया पढ़ लूं सलाम उन पर
ख़ुद भी दुरूद पढ़कर औरों को यूं पढ़ाया
या रब दुरूद उन पर या रब सलाम उन पर
उम्मत में जिन की तू ने या रब हमें बनाया

(२)

इब्ने मर्यम आस्मां पर जब गये
फिर तो सब शैतान औसर पा गये
नेक रूहों वाले तो रूहबान थे
सर्वसाधारण तो बस शैतान थे
दीन से उनका नहीं कुछ काम था
उनका नेता अब तो बस शैतान था
इस जहां का हाल तो बदतर हुआ
मानवों का रहना यां दूभर हुआ
आपसी युद्धों का यां ये हाल था
कम समय उनका तो चालिस साल था
ज़िन्दा बच्ची गाड़ दी जाती थी यां
आब्रू से खेलते थे खेल यां
पिछले नबियों की जो यां तअ़लीम थी
अब नहीं दुन्या में वो मौजूद थी
हर तरफ़ फैली जिहालत थी यहां
पापियों का ज़ोर ऐसा अल अमां
पीड़ितों की हाय फिर ऊपर गई
और रहमत फिर ख़ुदा की आ गई
अंततः अन्तिम नबी भेजा गया
नाम है उनका मुहम्मद मुस्तफ़ा
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हों आल और अस्हाब भी

(३)

थीं मुक़द्दर वाली बीबी आमिना
फ़ज़्ले रब से आप की थी वालिदा
मुहतरम वालिद तो अब्दुल्लाह थे
और अब्दुल मुत्तलिब दादा हुए
जब थे हज़रत अपनी मां के पेट में
हुक्मे रब से अब्बा उनके चल बसे
फ़ज़्ले रब से आप जब पैदा हुए
दादा अब्दुल मुत्तलिब अब ख़ुश हुए
ख़ुश हुए सब लोग घर के ख़ुश हुए
ख़ुश हुए जिन्नो मलाइक ख़ुश हुए
याद करके फ़ज़्ल वो अल्लाह का
आज तो हम सब मुसल्मां ख़ुश हुए
रब्बि सलिलम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हों आल और अस्हाब भी

(४)

कैसी अच्छी थी हलीमा आप की दाई बनीं
था नसीबा ज़ोर का जो आपकी माई बनीं
जब बड़े कुछ हो गये अल्लाह के महबूब वां
साथ में वां भाइयों के थी चराई बकरियां
साल छे के जब हुए तो वालिदा भी ना रहीं
रब का ये आदेश था बस छोड़कर वो चल बसीं
दादा अब्दुल मुत्तलिब ने लाड से पाला उन्हें
दस बरस के जब हुए दादा ने भी छोड़ा उन्हें
अब अबू तालिब चचा के साथ वो रहने लगे
वो क़ुरैशे मक्का के तो चोटी के सरदार थे
उम्र तो बढ़ती गई और हो गये पच्चीस के
हुस्न में यक्ता थे तो अम्राज़ से महफ़ूज़ थे
बी ख़दीजा बेवा जिनकी उम्र पैंतालिस साल
हुस्ने सीरत हुस्नेसूरत मालिके दौलत व माल

अक़्द हज़रत ने उन्हीं बीबी से बस फ़रमा लिया
और रफ़ीक़े ज़िन्दगी को इस तरह अपना लिया।
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी व बर रसूल
साथ में हो आल और अस्हाब व अज़वाजे रसूल

(५)

साल चालिस में नुबुव्वत की सरफ़राज़ी मिली
थी अज़ल से मुंतज़िर दुन्या में वो अब आ गई
हुक्मे रब से आपने पैग़ाम दुन्या को दिया
जो संदेसा लाये थे दुन्या को वो पहंचा दिया
है नहीं मअ़बूद कोई बस सिवा अल्लाह के
सुन के ये एअ़लान अपने भी पराये हो गये
बूलहब जैसे चचा भी अब पराये हो गये
नेक रूहें जो भी थी ईमान वो लाने लगीं
इब्लीस को मायूस कर इस्लाम में आने लगीं
बू बक्र और माई ख़दीजा और अ़ली वो ज़ैद से
तौफ़ीक़ दी अल्लाह ने इस्लाम में दाख़िल हुये
इस्लाम जब बढ़ने लगा शैतान तो जलने लगा
दाव वो करने लगा और पैतरे चलने लगा
आख़िरश हुक्म आ गया हिजरत मदीने को करो
मित्र जो हैं आपके सिद्दीक़ को भी साथ लो
हुक्में रब से अब मदीना मरकज़े इस्लाम था
इब्लीस ने गो नाक रगड़ी ग़ल्बा था इस्लाम का
एक दिन फिर वो भी आया फत्ह़ मक्का हो गया
धूल सर पर डाल कर शैतान जल कर रह गया
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबीयो बर रसूल
साथ में हो आल और अस्हाब व अज़वाजे रसूल

(६)

या नबी हम सब के आका आप हैं
या नबी हम सबके मौला आप हैं
आपको रब ने दयिा ख़ुल्क़े अज़ीम
बेसहारों के सहारा आप हैं
लिखाना पढ़ना आप ने सीखा नही
पर दो आ़लम के मुअ़ल्लिम आप हैं
रह़मतुल्लिलआलमीं तो आप हैं
और शफ़ीउ़ल मुज़नबीं भी आप हैं
सारे नबियों के भी तो ख़ातिम हैं आप
और ख़ात्मुल मुरसलीं भी आप हैं
सारे नबियों के भी है सरदार आप
महबूबे रब्बिल आ़लमीं तो आप हैं
कअ़बे से बैतुल मुक़द्दस एक रात
और ऊपर आस्मानों के सात
ख़ास मरकब भेज कर रब्बुल उ़ला
आप को मेहमां बनाकर ले गया
रब ने बख़्शा अअ़्ला रूत्बा आपको
जन्नतो दोज़ख़ दिखाई आप को
और हुई कुछ भेद की बातें वहां
ख़ालिको महबूब के फिर दर्मियां
रब ने बिलकुल पास अपने कर लिया
और नमाज़ों का वहां तुह़फ़ा दिया
सुब्ह़ से पहले ही वापस भेज कर
मुअ़्जिज़ा मिअ़्राज का दिखाला दिया
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ मे हों आल और अस्ह़ाब भी

(७)

बे अ़दद हैं आपके तो मुअ़्जिज़ात
आप की थीं मुअ़्जिज़ा हर एक बात
बदला जब मिमबर रसूलुल्लाह ने
उस्तुने ह़न्नाना रोया ज़ोर से
हाथ रखा कर आपने फिर चुप किया
सिस्कियां लेता हुआ वो चुप हुआ
जब इशारा आपने इक कर दिया
कंकरियों ने वहीं कल्मा पढ़ा
इक इशारा पाते ही तो चान्द के
बेरूके फ़ौरन ही दो टुकड़े हुए
बारहा पत्थर से निकला ये कलाम
या नबीयल्लाह तुमको अस्सलाम
और ये है बात सच्ची ला कलाम
आपको अश्जार करते थे सलाम
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हो आल और अस्ह़ाब भी

(८)

और हुदैबीया में सुन लो क्या हुआ
आप के लोटे में थोड़ा पानी था
पन्दरा सौ प्यास से बेताब थे

ढून्ढते पानी सभी अस्हाब थे
जब कहा सब ने रसूलल्लाह से
लोटे में पानी है बस अब आप के
लोटे में फिर हाथ डाला आपने
चश्मा उब्ला उंगलियों के बीच से
सबने जी भर भर के फिर पानी पिया
और वुज़ू भी पन्दरह सौ ने किया
जिसने देखा आंख से ये मुअ़जिज़ा
उसके ईमां का तो है कहना ही क्या
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हो आल और अस्हाब भी

(९)

हज़रते जाबिर का सुन लो माजरा
आटा उनके घर में बस इक साअ़ था
ज़ब्ह इक बक्री का बच्चा कर लिया
और रसूले पाक को मदऊ किया
काम पर मौजूद था मजमअ़ वहां
खोद कर खन्दक़ बनाता था वहां
आपने एअलाने दअ़वत कर दिया
हज़रते जाबिर का दिल घबरा गया
बीवी बोली आप घबराओ नहीं
देखोगे हम आज बरकाते नबी
की दुआ जाकर रसूलुल्लाह ने
बख़्श दी बरकत तो फिर अल्लाह ने
खाने वालों का लगाया जब शुमार
कम से कम गिन्ती थी उनकी इक हज़ार
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हो आल व अस्हाबे नबी

(१०)

और सुनाता हूं तुम्हें इक मुअ़जिज़ा
आप के घर इक प्याला दूध था
बू हुरैरा भूखे वां मौजूद थे
सुफ़्फ़ा वाले सुफ़्फ़े पर मौजूद थे
बु हुरैरा से बुला भेजा उन्हें
हुक्म से फिर आपके सब आगये
एक इक करके पिया उस दूध से
हो गये सब सेर पीकर दूध से
बू हुरैरा की भी बारी आ गई
पीते पीते सांस ऊपर आ गई
और पीने को नबी ने फिर कहा
अब वो बोले पेट बिल्कुल भर गया
पुर प्याला था अभी तक दूध से
नोश फ़रमाया रसूलुल्लाह ने
आपके तो हैं हज़ारों मुअ़जिज़े
हैं हदीसों की किताबों में लिखे
जो पयामे रब मिला था आपको
या नबी पैग़ाम वो पहुंचा दिया
जो अमानत दी ख़ुदा ने आपको
हम सभों तक उसको हां पहुंचा दिया
हम नहीं थे जानते क्या है ख़ुदा
आपने तफ्सील से समझा दिया
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी
साथ में हो आल और अस्हाब भी

(११)

ये सबक़ सीखा है हमने आप की तअ़लीम से
दोस्तो सुन लो इसे हो बा अदब तअ़ज़ीम से
सामने दौलत हो या कि वार हो तलवार का
हिर्स दौलत की न हो ना ख़ौफ़ हो उस वार का
तुम जमो तौहीद पर जो भी तुम्हारा हाल हो
शिर्क की हर बात पर चेहरा तुम्हारा लाल हो
बाड़ हो बन्दूक़ की या आग का अंबार हो
ना डरो मरने से तुम और शिर्क से बेज़ार हो
है नबी की पैरवी में पैरवी अल्लाह की
रहमतें मांगो नबी पर है ख़ुशी अल्लाह की
तर्के सुन्नत करने वाले सुन ले ये वो साफ़ साफ़
लैस मिन्नी आ गया है उनके हक़ में बेगज़ाफ़
जिस ने भी इस दीन में कोई भी ऐसी बात की
मेरे आक़ा ने कभी जिस की नहीं तअ़लीम दी
मेरे आक़ाने कहा वो रदद् है मरदूद है
करने वाला उस का रब की रहमतों से दूर है
चाहिए अपनाएं फिर हम सुन्नतो हुब्बे रसूल
और दुआ में यूं कहें या रब हमें कर ले क़बूल
रब्बि सल्लिम रब्बि सल्लि बर नबी व बर रसूल
साथ में हो आल और अस्हाब व अज़वाजे रसूल

मेरी मीलाद ख़्वानी

सम्पादक

तमाम तअरीफ़ें अल्लाह के लिये जो सारे जहानों का रब है और लाखों दुरूद व सलाम उस नबी पर जिसके ज़िक्र से अपने दिल व दिमाग़ को फ़रहत देने और अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल करने का इरादा किया है।

हां मैं एक मुस्लिम घराने में पैदा हुआ, जब मैं स्कूल जाने के लाइक़ हुआ तो मेरे वालिद साहिब ने मेरा नाम एक प्रेप्रेट्री स्कूल में लिखवा दिया। वहां एक पण्डित उस्ताद से अपने नाम पर इस्लामी तारीख़ के मशहूर ख़लीफ़ा हारून रशीद की तअ्रीफ़ सुनी। उस वक़्त तक मुझे घर या स्कूल में इस्लाम के बारे में कुछ नहीं बताया गया था। मेरे वालिद साहिब दीहाती मीलाद ख़्वाँ थे सिर्फ़ अपने गांव में मीलाद पढ़ दिया करते थे। मैं उनके साथ मीलाद की महफ़िलों में जाता और इसलिये जाता कि मुझे ढेर सारे बताशे मिलते, वहां मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम, उनकी कुछ अद्भुत बातें (अर्थात उनके मुअ्जिज़ात) और पैदाइश के हालात सुनता मगर यह न समझ पाता कि वह कहां पैदा हुए, उनके बारे में हमें क्या मानना चाहिए और वह मानव जाति (इन्सान) के लिए क्या सन्देश (पैग़ाम लाए) नमाज़ तो मेरे गांव में कोई पढ़ता न था। मीलाद पढ़ने वाले मेरे वालिद भी नमाज न पढ़ते थे। गांव में एक कच्ची पुरानी मस्जिद इस तरह की थी कि उसकी पच्छिमी दीवार अपने ताक़ों के साथ मौजूद थी, न चहार दीवारी न दरवाज़ा, ख़ाली, जगहों पर बेले की बेले और अनार के हरे भरे दरख़्त मौजूद थे, दीवार के वह ताक़ गांव की दीनदार कहलाने वाली औरतों की नज़्र या शादी बियाह के मौक़िअ पर ताक़ भरने के काम आते थे।

जब मैं दर्जा चहारुम में पहुंचा तो मेरी उर्दू बहुत अच्छी हो गई, अब मैं मीलाद की किताब फर फर पढ़ने लगा जबकि वालिद साहिब को मीलाद की किताब पढ़ने में दुश्वारी होती थी लिहाज़ा वालिद साहिब ने मुझे फ़ातिहा का तरीक़ा सिखा कर त्योंहारों पर घर घर फ़ातिहा ख़्वानी और मीलाद ख़्वानी का काम मेरे सिपुर्द कर दिया जिसे मैं बहुस्न व ख़ूबी (भली भांति) अंजाम देने लगा। यह याद रहे कि वालिद साहिब भी यह काम अल्लाह वास्ते करते थे और मैं भी, मीलाद के बताशों के सिवा और कुछ न लेता हमारे गांव में मीलाद पढ़ने वाले के लिए खाने की दअ्वत का भी रिवाज न था।

मीलाद की किताबों से मैं मीलाद तो पढ़ दिया करता मगर लफ़्ज़ मीलाद के मअ्ने (अर्थ) न जानता। सुनने वाले जब चाहते कि अब किताब ख़्वानी का सिल्सिला ख़त्म हो तो मुझसे कहते कि अब पैदाइश पढ़ो। वालिद साहिब ने पैदाइश के बयान पर निशान रख दिया था उसे खोल कर मैं पैदाइश पढ़ देता सब लोग खड़े हो जाते। मैं भी खड़े होकर सलाम पढ़ता सब लोग मेरे साथ आवाज़ मिलाकर "या नबी सलाम अ़लैक, या रसूल सलाम अ़लैक" पढ़ते। उस का तरीक़ा ये था कि पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तअ्रीफ़ में मुसद्दस या मुख़म्मस या रूबाओ़ी में एक बन्द मीलाद ख़्वाँ पढ़ता फिर सब लोग मिलकर आवाज़ से, या नबी सलाम अ़लैक या रसूल सलाम अ़लैक, या हबीब सलाम अ़लैक, सलवातुल्लहि अ़लैक" पढ़ते। इसकी तकरार देर तक रहती और जो लोग अपनी मश्ग़ूलियत या काहिली से मीलाद का बयान सुनने न आते सलाम की आवाज़ सुन कर दौड़ पड़ते, हिन्दू हज़रात भी आ जाते और सलाम के बअ्द तक़्सीम होने वाले बताशे से मुंह मीठा करते।

मैं उस वक़्त तक सिन्ने बुलूग़ तक न पहुंचा था अपने भोले पन से लोगों से पूछता कि यह सलाम फिर खड़े होकर क्यों पढ़ा जाता। ख़ान्दान के बड़े बूढ़े समझाते कि जब तुम पैदाइश पढ़ते हो तो यह ख़याल बान्ध कर कि हुज़ूर सल्लल्लाहि अ़लैहि व सल्लम दुन्या में तशरीफ़ ले आए हैं, हम सब लोग अदबन खड़े हो जाते हैं और सलात व सलाम पढ़ने लगते हैं। मैं कहता कि हुज़ूर की पैदाइश जो मैं पढ़ता हूं वह तो उस वक़्त की ख़बर दोहराता हूं जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पैदा हुए थे, अब खड़े होना समझ में नहीं आता। कुछ बड़ों ने मुझे समझाया कि जिस वक़्त तुम पैदाइश पढ़ते हो हुज़ूर सल्लल्लवाहु अ़लैहि व सल्लम की रूह महफ़िल में आ जाती है इसलिये उनके एहतिराम में खड़े होकर सलाम पढ़ा जाता है। बहरहाल मैं वालिद साहिब की तरह मीलाद पढ़ता रहा मगर सोच में ज़रूर था।

मैं पैदाइश के बयान में जब हज़रत आमिना का हाल पढ़ता कि हुज़ूर (स०) की पैदाइश के वक़्त कोई तक्लीफ़ न हुई उनको एक फ़िरिश्ते ने एक ख़ास शरबत पेश किया जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद, बर्फ से ज़ियादा ठण्डा और शहद से ज़ियादा मीठा था, उसे हज़रत आमिना ने नोश फ़रमाया, फिर फ़िरिश्ते ने कहाः इज़हर या सय्यिदल मुरसलीन, इज़हर या ख़ातमन्नबिय्यीन इज़हर या हबीबे रब्बिल आलमीन, जब मअने के साथ यह जुम्ले अदा करता तो मुझे ज़रा शर्म मअलूम होती, और जब महफ़िल में मेरी अम्मा और बाजी होतीं तो मुझे और शर्म आती और मैं खयाल करता कि किसी की पैदाइश का नज़्म आड़ और पर्दे में किया जाता है और पैदाइश के वक़्त की कैफ़ीयात औरतें औरतों से तो कहती हैं, अपने शौहर के अलावा किसी मर्द के सामने बयान करने से शर्माती है और हम माओं बहनों के सामने अशरफ़ुल मख़लूक़ात सय्यिदुल अंबिया वुर्रुसुल का बयान इस भोन्डे तरीक़े से करते हैं।

जब मैं मिडिल स्कूल आ गया और इल्म में और इज़ाफ़ा हुआ अगर्चि अभी सिन्ने बुलूग़ को न पहुंचा था अब मुझे मअ़लूम हुआ कि मीलाद का अर्थ है पैदाइश महफ़िले मीलाद यअ़नी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की महफ़िल। भाइयो सोचो मुझे तो शर्म आने लगी। मैं देखता कभी ज़रूरत पड़ जाती और कोई औरत किसी की पैदाइश की तफ़्सीलात किसी को सुनाती तो उस मजलिस में अगर बच्चे होते तो खिस्का दिये जाते तब वह तफ़्सील बयान करती तो जो सारी मख़्लूक़ में अफ़्ज़ल व अअ़्ला हैं उनकी पैदाइश के बयान के लिए मजलिस बुलाई जाए और महफ़िल सजाई जाए इसमें मुझे कुछ हिचकिचाहट सी होने लगी। अब तक मुझे मीलाद पढ़ने के लिए बुलाया जाता रहा अब मैं महफ़िले मीलाद में कोई लिखा हुआ वअ़ज़ पढ़ देता मेरे बअ़ज़ अज़ीज़ों ने मुझे जमाअ़ते इस्लामी का लिट्रेचर पढ़ने को दिया मैंने रिसाल–ए–दीन्यात पढ़ा, ख़ुत्बात पढ़े, मुफ़्ती शौकत अ़ली फ़हमी की "फ़लाहे दीन व दुन्या" पढ़ी मौलाना मंजूर नोमानी की "इस्लाम क्या है" पढ़ी अब मैं मीलाद की महफिल में इन किताबों में से कोई सबक़ सुना देता और आख़िर में यह कहता भाइयों अब आख़िर में आओ अपने हुज़ूर सल्लल्लाहू अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ लें मैं खड़ा हो जाता। सब लोग खड़े हो जाते और या नबी सलाम अलैक" मंज़ूम के दो तीन बन्द पढ़ कर दुआ कर लेता बताशे बंटते लोग अपने अपने घर चले जाते। मेरा यह तरीक़ा बहुत पसन्द किया गया।

बअ़ज़ पढ़े लिखे लोगों को जब मेरे इश्कालात मअ़लूम हुए तो उन्होंने मुझे समझाने की कोशिश की कि अस्ल में यह महफिले मीलाद नहीं है, ईदे मीलादुन्नबी है यअ़नी नबी के पैदा होने की ख़ुशी। मैंने जवाब दिया ठीक है, हर मुसलमान को इस बात पर ख़ुश होना ही चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने अपने आख़िरी नबी को भेजा और हम को उनकी उम्मत में किया बड़ा बदबख़्त है वह मुसलमान जिसको इस नेअ़मत पर ख़ुशी न हो और चाहिए कि जब भी इस नेअ़मत की याद आए दिल ख़ुश हो, और इस नेअ़मत की याद तो कम से कम पांचों नमाज़ों में आना ही चाहिए इसलिए कि यह नमाज़ें हमको आप स० ही से मिली हैं। हमने ग़ौर किया तो समझ में आया कि इसका इन्तिज़ाम तो ख़ुद अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की जानिब से मौजूद है कोई नमाज़ "अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबीयु व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू" पढ़े बिना होगी ही नहीं और दुरूदे इब्राहीमी भी पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है और सुन्नते मुअक्किदा तो फ़िक़्ही तक़्सीम है, कौन मुसलमान होगा जो दुरूदे इब्राहीमी "अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन (आखिर तक) पढ़े बिना नमाज़ पूरी करता होगा। पस मेरी समझ में आया कि "महफ़िले ईदे मीलादुन्नबी" अलग से काइम करने की ज़रूरत नहीं मअ़लूम होती इसलिए मैंने महफ़िले मीलादुन्नबी के बजाए "मजलिसे वअ़ज़" या "जल्स–ए–सीरतुन्नबी" या "ज़िक्रे नबी के नाम से लोगों को बुलाना शुरूअ़ किया और उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़, तअ़लीमात वग़ैरह बयान करना शुरूअ़ किया सीरत के बयान में पैदाइश का बयान भी इस तरह आ ही जाता कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में बारह रबीउ़ल अव्वल दोशंबे के रोज़ पैदा हुए वालिद का नाम अब्दुल्लाह था, वालिदा का नाम आमिना था। फिर आप के दुन्या में आने का मक़्सद आप की तअ़लीमात आप पर उतारे गये क़ुर्आने करीम और उसकी तअ़लीमात का ज़िक्र आता। आख़िर में खड़े होकर सलात व सलाम पढ़ कर दुआ कर लेता। यह तरीक़ा भी बहुत मक़्बूल रहा।

लेकिन जब मैंने मअ़लूम करने की कोशिश की कि नमाज़ पढ़ने का हुक्म रोज़ा रखने का हुक्म ज़कात देने का हुक्म, हज करने का हुकम, कुर्बानी करने का हुक्म निकाह करने का हुक्म, वलीमा करने का हुक्म तो कुर्आने मजीद में या ह़दीस की किताबों में या फ़िक्ह की किताबों में लिखा मिलता है, लेकिन मीलाद का हुक्म कहीं नहीं मिलता इस बात की तरफ़ मेरी तवज्जुह एक अज़ीज़ा ने दिलाई वह एक वकील की बीवी हैं पहले मुझे बुरा लगा लेकिन जब खोज की तो बात सच्ची निकली कहीं मीलाद का हुक्म न मिला, मिला तो यह मिला कि मीलाद जाइज़ है। फिर जब मैंने जाना की यह बअ़्द की निकाली हुई चीज़ है जो बिदअ़त के हुक्म में आती हे लेकिन कुछ लोग इसे अच्छी बिदअ़त कहते हैं तो कुछ लोग कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ह़दीस "कुल्लु बिदअ़तिन ज़लालतुन्" के बअ़्द कोई बिद्अ़त अच्छी नहीं हो सकती इसके बअ़्द मैंने खड़े होकर सलाम पढ़ना छोड़ दिया। जहां बुलाया जाता हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाइश से बयान शुरूअ़ करता पूरी तक़रीर में सलात व सलाम बार बार पढ़ता, मौक़अ़ निकाल कर मंज़ूम सलाम भी पढ़ता मगर खड़े होकर सलाम पढ़ना तर्क कर दिया, हमारे ह़ल्के में यह तरीक़ा भी पसन्दीदा रहा लेकिन कुछ आ़लिम कहलाने वाले लोगों ने गांव के कुछ लोगों को मेरे ख़िलाफ़ भर दिया अब वह अपने दरवाज़े मीलाद पढ़ने के लिए किसी मीलाद ख्वाँ को बुला लेते हैं मुझे अफ़सोस है कि कुछ लोगों में मन मुटाव ज़रूर है। अगरचि वह मेरा एहतिराम करते हैं, मेरी तक़रीरें सुनते हैं और मेरे पीछे नमाज़ पढ़ते हैं। अल्लाह तआ़ला हमको भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मह़ब्बत की दौलत से नवाज़े और हमारे भाइयों को भी और हम सबको आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीके पर जिन्दगी गुजारने की तौफीक दे आमीन।

(पृष्ठ ४ का शेष)

को मह़बूब हो जाते हैं, आप को अमीन व सादिक़ कह कर पुकारा जाता है। बिल्कुल फ़ुज़ूल में शिरकत, ह़जरे अस्वद के क़ज़ीये झगड़े के ह़ल से, मक्के में आप को जो मकाम ह़ासिल था वह सरदाराने मक्का के लिए क़ाबिले रश्क था और यह मक्बूलीयत व मह़बूबीयत मक्का मुकर्रमा में चालीस साल तक रही लेकिन कभी आप के यौमे विलादत की तक़रीब न मनाई गई। (अल्लाह की रह़मत हो आप पर और अल्लाह का सलाम)

फिर जब आप ने अल्लाह के हुक्म से अपनी नुबुव्वत व रिसालत का एअ़लान किया मुख़ालफ़तों का ऐसा तक्लीफ़ देह सिल्सिला शुरूअ़ हुआ कि अल्लाह के हुक्म से आपको मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत करना पड़ी, मुख़लाफ़त चलतीरही साथ साथ अल्लाह तआ़ला की ताईद व मदद भी होती रही, गज़वात ने फुतूहाते मुसल्सल का दरवाजा खोल रखा था, साथ ही जाहिल शुअ़रा जब बद कलामियां करते तो जवाब में ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि०) के अशआर मस्जिद में सुने जाते लेकिन कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादत का ज़िक्र आया हो या यौमे विलादत पर कोई तक़रीब हुई हो ऐसा ढून्ढे से भी न मिलेगा, अगर ऐसा होता तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैदाइश की तारीख़ कोई ६ रबीउ़ल अव्वल तो कोई १२ रबीउ़ल अव्वल न लिखता।

पस हम मुसलमान अगर दुन्या के लीडरों के मानने वालों की तक़्लीद में अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैदाइश के दिन कोई तक़्रीब मनाते हैं तो यह हमारा मदनी व मुआ़शरती (सांस्कृतिक व सामाजिक) ह़क़ है लेकिन इन तक़्रीबात (उत्सवों) में जरा यह इस्लाह कर लें कि इस बहाने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते पाक (जो हमारे लिये उस्व–ए–ह़सना है) के बयान और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की दअ़्वत की अहम्मीयत को शामिल कर लें तो नूरून अ़ला नूर हो जाए।

इताअ़त अ़लामत मह़ब्बत की है
अगर है मह़ब्बत इताअ़त भी है
हैं मह़बूब हमको नबीये करीम
अज़ीज़ उनकी हर एक सुन्नत भी है
दुरूद उन पे लाखों हो लाखों सलाम
और आले मुतह्हर पे यारब मुदाम

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग़, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

हिन्दुस्तान के मुस्लिम शासकों की उदारता

मुमताज अहमद मिसबाही

ऐतिहासिक प्रमाण और घटनायें बताती है कि मुस्लिम हुकूमत के दौरं में हिन्दुस्तान न सिर्फ यह कि एक महान खुशहाल मुल्क था बल्कि इस मुल्क में फिरका परस्ती (साम्प्रदायिकता) मजहबी तंग नजरी व तअस्सुब (संकीर्ण धार्मिक भावना) का नाम व निशान तक नहीं था। लेकिन इस वसतुसिीति के बावजूद फिरका परस्त अनासिर (तत्व) लम्बे समय सुनियोजित तरीक़े से हिन्दुस्तान के मुस्लिम बादशाहों पर अत्यन्त ओछे इल्जाम आयद करके उनकी छवि को बिगाड़ने और अकसरियत के दिलों में भरत के मुसलमानों के खिलाफ नफरत व हिकारत की भावना पैदा करके उनके जीवन को अजीरान करने में लगे हैं। हालांकि कोई भी इन्साफ पसन्द आदमी अगर खुले दिल से इस पहलू पर गौर करे कि इस्लाम के विजेताओं में अगर शराफत, व्यापक दृष्टिकोण और मजहबी उदारता न होती तो वह हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश पर सात सौ साल तक बड़ी कामयाबी के साथ हुकूमत कैसे कर सकत थे तो साम्प्रदायिक तत्वों के इल्जामात को कलई खुलती हुई नजर आयेगी।

विख्यात कलमकार श्री एम० एन० राय ने हिन्दुस्तान में इस्लामी विजयो पर बहुत ही अछूते अन्दाज में टिप्पणी किया है कि यह बात ध्यान में रहना चाहिए कि लम्बा इतिहास रखने वाली और प्राचीन सभ्यता की हामिल (सक्षम) कोई भी कौम उस समय तक आसानी के साथ किसी विदेश आक्रमणकारी के सामने हथियार नहीं डाल सकती जब तक कि वह इस हमला आवर को अपना हमदर्द और दोस्त नहीं समझ लेती। अतएव ब्रहमनी कदामत पसन्दी (रूढ़वादिता) महात्मा बुद्ध के बरपा करदा इन्कलाब पर गालिब आचुकी थी और ब्रहमनियत के इस वर्चस्व (गल्बः) के बाद इस देश के वह बेशुमार वासी जिन्हें मातूब (दलित) और मरदूद समझा जाता था इस्लाम के सन्देश को अपनाने के लिए तैयार थे। इसी दौर में मुहम्मद बिन क़ासिम हिन्दुस्तान पर हमला आवर हुआ और बड़ी आसानी के साथ सिन्ध पर काबिज हो गया।

मुस्लिम शासको की उदारता और बेतअस्सुबी पर हिन्दुस्तान के विख्यात इतिहासकार श्री राजकुमार सिन्हा ने यूं टिप्पणी की है, "ऐतिहासिक साक्ष्यों तथा घटनाओं पर गौर करने के बाद यह बात पाये सबूत को पहुंच जाती है कि मुसलमानों ने इस देश में विजेता की हैसियत से कदम रखने के बाद इस देश को किसी विदेश इस्लामी सल्तन की कालोनी नहीं बनाया बल्कि वह इस देश में इस तरह रस बस गये कि गोया वह इस देश के पुराने वासी हैं। उन्होंने कभी इस मुल्क के पुराने वासियों के साथ कमतरी का सुलूक नहीं किया बल्कि उन्होंने हमेशा उनको बराबरी का दर्जा दिया अतएव हिन्दुस्तान के सबसे पहला विजेता मुहम्मद बिन कासिम ने जब सिन्ध का इलाका फतेह किया तो उसे पूर्वी देशों के गवर्नर हिजाज बिन यूसुफ की ओर से निर्देश मिले कि सिन्ध वासियों के साथ नर्मी और दिलदारी (सहृदयता) का व्यवहार करो। जो राजा आज्ञा मान लें उनकी हुकूमत उनहीं के हाथ में रहने दो। विजित की सन्धियों (समझौतों) की सुरक्षा करो और उसके मजहबी हस्तक्षेप (मुदाखलत) न करो।"

हिन्दुस्तान में मुगलिया सल्तनत के संस्थापक शहनशाह बाबर का शासन काल यद्यपि लम्बी अवधि तक नहीं रहा और वह पूरी उम्र युद्धक्षेत्र ही में वयस्त रहा, तथापि हर मौके पर उसकी उदारता का इतिहास मिलता है।

प्रोफेसर सिडनी बेओविपिन लिखते हैं "बाबर मात्र अनुभवी ही न था बल्कि उस जैसी उदार तबियत के इन्सान में मजहबी तअस्सुब के तत्व का पाया जाना खिलाफे अक्ल था।" अतएव बाबर के अक्सर फरमानों और वसीयतों से यह हकीकत जाहिर हो जाती है कि उसने अपनी औलाद को सख्ती के साथ इस बात की ताकीद की थी कि हर हाल में हिन्दुओं का पूरा पूरा ख्याल रखना और इस बात की एहतियात भी जरूर करना कि उनके साथ कभी भी किसी क़िस्म का अनुदार व्यवहार न होने पाये। बाबर की इस वसीयत का नतीजा था कि हुमायूं की जब तक हुकूमत रही उस ने गैर मुस्लिमों को खूब नेवाजा और उनको खुली हुई आजादी भी दी।

तंगनजर इतिहासकारों ने

हिन्दुओं के साथ औरंगजेब की कथित तंगनजरी और तअस्सुब पर बहुत कुछ लिखा है। लेकिन नामवर, इतिहासकारों अलफिस्टन लिखते हैं, "उसके शासन काल में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि मजहब की बुनियाद पर किसी एक हिन्दू ने भी जान माल या कैद की सजा बर्दाश्त की हो।" औरंगजेब की सत्ता काल में हिन्दू हमेशा बराबर बड़े बड़े पदों पर पदासीन होते रहे। अतएव उसके सबसे बड़े विश्वासपात्र जसवन्त सिंह और जय सिंह थे। शहनशाह औरंगजेब के तअल्लुक से इतिहासकार बर्नियर ने अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है "औरंगजेब ने मुस्लिम प्रतिष्ठित व्यक्तियों की तरह बेशुमार हिन्दुओं को सिपहसालारी और दूसरे महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थापित (सरफराज़) किया है, सिर्फ यही नहीं बल्कि बाज बाज हिन्दु उमरा ने कई कई बार बगावतों में हिस्सा लिया है, लेकिन उनको न सिर्फ यह कि क्षमा कर दिया बल्कि फिर जिम्मेदारी के ओहदों पर बहाल कर दिया।" क्या दुनिया की किसी कौम ने भी बागियों के साथ ऐसी उदारता का व्यवहार किया है।?

हिन्दुस्तान के मुतअस्सिब (पूर्वाग्राहित) इतिहासकारों और लेखकों ने सुल्तान महमूद गज़नवी को हिन्दु धर्म और हिन्दू कौम का सबसे बड़ा दुश्मन करार दिया है। हद तो यह है कि उसे एक डाकू और लुटेरे का नाम दिया है। लेकिन प्रोफेसर राय शिवेन्द्र बहादुर ने महमूद गजनवी के किरदार पर टिप्पणी करते हुए लिखा हे, "डरपेक ने स्पेन जहाजों को लूटा और स्पेन वासियों पर बेपनाह जुल्म ढाये लेकिन क्या उसे डाकू और लुटेरा कहा जाये। महमूद गजनवी के हमलों के दौरान जो कुछ हुआ ऐसा होना युद्ध के दौना आश्चर्य की बात नहीं हैं।" इतिहास गवाह है कि जब युद्ध के बाद अमन कायम हो गया तो महमूद गजनवी ने इस मुल्क के हिन्दू राजाओं की औलादों पर बड़ी मेहरबानी की। उनके साथ न सिर्फ यह कि शफ़क़त व मुहब्बत का सुलूक किया बल्कि उनको उच्च पद पर भी दिये।

सुल्तान शेरशाह पठान थे लेकिन हिन्दुओं के साथ जो स्नेहपूर्ण व्यवहार किये वह आज भी इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं। उसका सार्वजनिक कल्याण विभाग बहुत अधिक मशहूर है। उसने शाहराहों पर सरायें और मुसाफिर खाने बनवाये थे और उनमें विशेष प्रकार से यह व्यवस्था किया था कि हिन्दुओं को हिन्दुओं के हाथों से खना मिले ताकि किसी की धार्मिक भावना को ठेस न पहुंचे। सुल्तान सिकन्दर लोधी इस बात का बेहद इच्छुक था कि हिन्दु उच्च पदों पर दिखाई दें। अतएव उसने हिन्दुओं को फारसी पढ़ाकर मुल्की और इन्तेजामी ओहदों पर पदस्थापित करना अपना फर्ज समझा। बीजापुर के शासक सुल्तान आदिल ने तो इस कदर उदारता दिखाई कि उसने ब्राह्मणों को बहुत ऊँचे पदों पर पदस्थापित किया। यही नहीं बल्कि फारसी के बजाय मरहठी को सरकारी जबान करार देकर फारसी का गला घोंट दिया। फ्रांसीसी पर्यटक मोसियोथियों ने अपनी यात्रा के वर्णन में लिखा है कि "दकन में तमाम माल विभाग ब्रहमणों के हाथों में हैं जो लेने दने में बनियों की अपेक्षा अधिक कठोर और बेरहम हैं।" सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह के बारे में है कि जब उन्होंने मस्जिदों में लंगर खाने की व्यवस्था कराया तो लंगर खानों में गरीब हिन्दुओं के लिए राशन (बेपका खाना) की भी व्यवस्था करायी"

सुल्तान जहांगीर और शाहजहां भी हमेशा उदारता की पालीसी पर अमल पैरा (व्यवहार में लाना) रहे। जहांगीर की उदारता और विशाल दृष्टिकोण की हद तो यह थी कि वह हिन्दुस्तानियों की सेवा में उपस्थित होते थे और उन से सब्र तसौउफ (ब्रहमवाद, सूफीइज्म) के बारे में मालूमात इकट्ठा करते थे।

आज उर्दू को मुसलमानों की जबान करार देकर उसके प्रति तंगनजरी और तअस्सुब की सहज अभिव्यक्ति की जाती है लेकिन भाषा मामले में मुस्लिम शासकों के कार्य की समीक्षा की जाये तो यह हकीकत खुल कर सामने आयेगी कि उन्होंने संस्कृत और हिन्दी आदि भाषाओं के विकास में किसी प्रकार की कोताही नहीं की। सम्राट अकबर ने मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी, फैजी नकीब खाँ और बड़े बड़े फारसी विशेषज्ञों को संस्कृत के पवित्र ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद करने पर नियुक्त किया और इसी तरह फारसी की महत्वपूर्ण तथा पवित्र पुस्तको का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए बेशुमार हिन्दु विद्वानों को नियुक्त किया। इस का नतीजा यह सामने आया कि मुसलमान हिन्दू धर्म के उसूलों से वाक़िफ़ होना शुरू हो गये। और हिन्दी साहित्य धीरे धीरे इस्लामी देशों में प्रकाशित होने लगा। उस समय के

(शेष पृष्ठ २० पर)

क्या महज़ मुसलमान होना काफ़ी नहीं?

मौ० अ़ब्दुल माजिद दर्याबादी

आप अगर ज़ी इल्म हैं, तो बराह रास्त कलाम मजीद का वरना फिर उसके उर्दू तरजुमे का मुताला किया होगा आपके खुदाए पाक के कलाम में नजात, मगफिरत बखशाइश के लिए किया चीजें दर्ज हैं? महज इस्लाम, ईमान व आमाले सालिहा या कुछ और भी? महज अल्लाह को एक जानना, उसके सब पैगम्बरों को इजमालन और उसके आखिरी पयाम लाने वाले को तफसीलन बरहक जानना, कुर्आन को अल्लाह का सच्चा कलाम जानना और फिर उनहीं अकाइद के मुताबिक अमल करना, बस यही चीजें आप को मिलीं या उनके अलावा कोई और शै भी आप की नजर से गुजरी है? कुर्आन मजीद के तीसों पारे इन्हीं अक़ाइद व अअ़माल की तशरीह व तफसील से लबरेज हैं या इन के अलावा किसी और अकीदे किसी और अमल का हुक्म भी आप को दिया गया है? खूब गौर कर लीजिये, सारे कुर्आन में अव्वल से अखिर तक बजुज़ अक़ीद–ए–तौहीद व रिसालत के और उन्हीं अकाइद के मुताबिक आमाल की तफसील व तशरीह के कोई भी दूसरा अकीदा, कोई भी दूसरा अमल, आप के सामने पेश किया गया है?

कुर्आन के बाद, सुन्नते रसूल का दर्जा है, अपने रसूल पाक की सारी किताबे ज़िन्दगी को पढ़ डालये, बजुज अल्लाह की बाबत सही अकीदा रखने और उसकी इताअत व इबादत में वक्त गुजारने के, कोई भी दूसरी शै नजर पड़ेगी? नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, जिहाद, कुर्बानी वगैरह आमाल के अलावह, जिनकी ताकीद हर मुसलमान को मुसल्लम है कोई और भी आप के रसूले करीम का मशगला था?

अल्लाह की इन्तिहाई रहमत के लिए आप ने किन चीजों को पेश किया है? मुहब्बते इलाही, खशियत इलाही, इताअते रसूल, और अल्लाह के हुकूक और बन्दों के हुकूक की अदाई को, या उनके अलावह भी किसी और अमल या शुगल को? अगर आप के नजदीक भी इस्लाम का कल्मा महज लाइलाहा इल्ललाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह होना मुसल्लम है, अगर राहते अबदी व सुरूरे उखरवी के लिए सिर्फ, मुस्लिम होना आप के नजदीक भी काफी है, तो फिर ये क्या है, कि इतनी सीधी बात छोड़ कर आप ने अपनी मजहबी जिन्दगी में सैकड़ों पेचीदगियां पैदा कर ली हैं आप के खुदा ने कहा था कि "मुझको यकता तसलीम करो और मेरे रसूल के बताए हुए तरीके पर चलकर मुझ तक पहुंच जाओ", आप के रसूल स० ने कहा था कि खुदाए वाहिद का इकरार करो, और मेरे नक्शे कदम पर चलकर उस तक अपनी रसाई पैदा कर लो, मगर आपको अपनी इस राय पर इसरार है, कि महज, मुसलिम होना काफी नहीं है महज अल्लाह का फरमा बरदार होना काफी नहीं महज मुहम्मद रसूलुल्लाह की उम्मत में होना काफी नहीं, जब तक उस के साथ बाज और निसबतों और इजाफतों को न मिला लिया जाए।

आप ने जो सदहा मशरब और फिर्के तराश लिए हैं किया हुजूर संरवर कौनेन स० भी उनमें से किसी ग्रोह में थे? हजरत सिद्दीक हनफी थे या हम्बली? हजरत फारूक मुकल्लिद थे या गैर मुकल्लिद? हजरज उस्मान चिश्ती थे या नकशबन्दी? हजरत अली सूफी थे या अहले हदीस?

कलाम पाक में बहुत न सही, किसी एक जगह भी, मुस्तकिल्लन न सही जिमनन्न भी, सराहतन न सही, किनायतन भी हनफी, मालिकी शाफई, हम्बली अहले हदीस, व अहले फिक्ह, सूफी वहाबी, चिश्ती, नक्शबन्दी अशअरी, मातुरीदी, अहले कुर्आन, अहमदी, शिया, खारिजी, नासिबी व मोतजली, गरज इन बेशुमार, इसलामी फिर्कों में से जो आज पैदा हो चुके हैं, किसी एक का भी जिक्र आता है? रसूले खुदा के जमाने में उन में से किसी के भी मसाइल जेरे बहस रहा करते थे? कुर्आन की मखलूकियत रसूल का इल्म गैब, इमकाने किज़्बे बारी, वगैरह इस किस्म के मसायल जिन पर हजारहा बहसें हो चुकीं, और हो रही हैं किया रसूल स० और रसूल के सहाबा भी उनही बहसों में मशगूल रहते थे? किया कुर्आने भी आप को उन्हीं बहसों में पड़ने की दावत देता है जब ये कुछ नहीं तो जरा अपने दिल में इन्साफ फरमाईये कि फिर ये आप को क्यों इसरार है, कि नजात के लिए महज " मुस्लिम" होना काफी नहीं बल्कि जिस बुजुर्ग, जिस आलिम

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हरमे मदनी

मस्जिदे नबवी का नया तौसीअशुदह हिस्सा

अबुल मुअज़्ज़मन नदवी

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना मुनव्वरह तशरीफ लाये तो आपने मस्जिदे कुबा के बाद मस्जिदे नबवी की तामीर फरमाई उस वक़्त मस्जिद का रक़बा तीस बाई पैतीस मीटर था, जब जगह तंग होने लगी तो आपने इस्में मजीद इजाफा फरमाया इस तरह तक़रीबन ढाई हजार मुरब्बा मीटर मस्जिदे नबवी का रकबा बढ़ गया, इसके बाद खुलफा ए राशिदीन के दौर में फिर उमवी और अब्बासी अहदे हुकूमत में मस्जिदे नबवी में बराबर इजाफे होते रहे, उस्मानी सलातीन ने भी मस्जिदे नबवी की तौसीअ में हिस्सा लिया, आखिर में मलिक अब्दुल अजीज, शाह सऊद मलिक फैसल और खालिद के दौर में इजाफे हुए मलिक फहद बिन अब्दुल अजीज के जरिये हुई जो गैर मामूली वुस्अत आखिरी तौसीअ बुस्अत और कुशादगी और इस्तेहकाम और खूबसूरती व पायदारी में सारे रिकार्ड तोड़ गई तौसीअ के आखिरी मनसूबे में एक लाख मीटर मुरब्बा जमीन मस्जिदे नबवी के चारों तरफ की इमारतों और जमीनों को खरीदने के बाद मस्जिद के रकबे में जो इजाफा हुआ है वह पहले के मुकाबले में पांच गुना है इस आखिरी तौसीअ के बाद, पुरी मस्जिदे नबवी का मुकम्मल रकबा अट्ठानवे हजार पांच सौ मीटर मुरब्बा हो गया, इस तरह २८ हजार नमाजियों के बजाए दो लाख पचास हजार नमाजियों की गुनजाइश हो गई, ये सारे नमाजी मस्जिद के ऊपरी और नीचे की मंज़िल में समा जाते है, मस्ज़िद की सत्ह का रकबा सरसठ हजार मीटर मुरब्बा है, हज के जमाने में जब खूब भीड़ हो जाती है तो मस्जिदे नबवी के अन्दर और बाहर तक़रीबन दस लाख नमाजियों के लिए गुंजाइश हो जाती है।

नई तौसीअ में दूसरी मन्जिल दो हजार एक सौ चौहत्तर खूबसूरत और बहुत मजबूत सुतूनों (खम्भों) पर कायम है यह सारे सुतून (खम्भे) सफेद संगे मरमर से इस तरह मुजय्यन किये गये हैं कि उनका मन्जर बहुत ही हसीन व खूबसूरत नजर आता है।

इन तमाम सुतूनों में सत्तरह हजार टन अअ़ला दरजेह का संगे मरमर इस्तिअ़माल किया गया है, इन सुतूनों को पच्चीस हजार मरमरी गिलाफों से मुजय्यन किया गया है।

नई तौसीअ़ में छे मिनारे बनाये गये हैं इस तरह मस्जिदे नबवी के दस मिनारे हो गये, इनमें हर एक की बुलन्दी एक सौ चार मीटर है, इन तमाम मिनारों के ऊपरी हिस्से पर जो हिलाल नसब है इनका वजन साढ़े चार टन है–

नई तौसीअ में २७ कुब्बे (गुम्बद) है जो खुदकार तरीके से खुल जाते हैं, इनके खुलने से रौशनी और हवा के ताजा झोंके अन्दर आते हैं। गुम्बद के अन्दरूनी हिस्से को कीमती पत्थरों और अअला दरजे की लकड़ियों से सजाया गया है। इतने बड़े कुब्बे (गुम्बद) को खुलने में सिर्फ एक मिनट लगता है, जबकि हाथ से खोलने में तीस मिनट लगते हैं, इस कुब्बे का वजन दस टन है।

नई तौसीअ में जितने दरवाजे लगाये गये हैं वह सब अअ़ला दरजे के सागवन की लकड़ी के बने हुए है ये सारे दरवाजे इस तरह बनवाये गये हैं कि इनमें कहीं भी लोहे या कील का इस्तेमाल नहीं किया गया है हर दरवाजे का वजन ढाई टन है, दरवाजे इतने तवाजुन से लगाये गये हैं कि इनका बन्द करना और खोलना बहुत ही आसान है मस्जिदे नबवी में मजमूई तौर पर पचास दरवाजे हैं।

नये तौसीअ शुदह (बढ़ाए गये) हिस्से की खिड़कियां और बाहर से आने वाली रौशनी और हवा, दीवारों और छतों की तजईन व आराइश और बरकी रौशनी में यकसानियत और बराबरी है, तरह तरह के रंगीन संगे मरमर को इस तरह फिट किया गया है कि देखने में दिलकश और आंखों को भले माअलूम होते हैं।

मस्जिदे नबवी को इयर कन्डीशन के जरिये ठण्डा रखने का गैर मअ़मूली इन्तिजाम है, इसके लिए एक सौ चालीस युनिट काम करते हैं, बरकी निजाम, माइक सिस्टम और अन्दर के हिस्से की निगरानी के लिए मराकिज है जहां मस्जिदे नबवी के तमाम हिस्सों को कैमरों के जरिये कन्ट्रोल किया जाता है।

मस्जिदे नबवी की नई तौसीअ में बैरूनी हिस्से को भी अअ़ला दरजे के संगेमरमर से मुजय्यन किया गया है, ये मैदान दो लाख पैंतीस हजार मीटर मुरब्बा के रक़बे पर फैला हुआ है, नए तौसीई मनसूबे में मस्जिदे नबवी की बरकी रौशनी और इयर कन्डीशन की सुहूलतों से आरास्ता करने के लिए मस्जिदे नबवी से सात किलो मीटर के फासले पर इयर कन्डीशन और बिजली घर बनाये गये हैं ये सत्तर हजार मीटर मुरब्बा इलाके पर फैला हुआ है, इसमें इयर कन्डीशन की मशीन, बरकी ट्रान्सफार्मर, जनरेटर रिजर्व और हंगामी हालात में छे भारी भरकम मशीने हैं इनमें से हर एक के अन्दर तीन हजार चार सौ पावर की सलाहियत है ब अलफाजे दीगर आठ लाख उन्नीस हजार मीटर मुकअब फी घनटा काम करने की सलाहियत है इन मशीनों के जरिये मस्जिदे नबवी में लगे हुए एक सौ चौवालिस इयर कन्डीशन युनिट को जेरे ज़मीन पाइप के ज़रिये ठण्डी हवा फराहम की जाती है।

मस्जिदे नबवी के तीन तरफ जेरे जमीन दो मन्ज़िल पारकिंग और वुजू और गुस्ल के लिए इन्तिज़ामात किये गये है, ये पूरा हिस्सा तीन लाख नव्वे हजार मीटर मुरब्बा रकबा पर फैला हुआ है ये हिस्सा भी देखने में ऐसी अजीम इमारत मअ़लूम होती है। जो किबला की सम्त में पांच सौ पचास मीटर मगरिबी समत में तीन सौ पचास मीटर और मस्जिदे नबवी के शिमाली हिस्से में साढ़े पांच सौ मीटर यानी तीन किलोमीटर मुरब्बा में हैं, पारकिंग हिस्से में बयक वक्त चार हजार दो सौ गाड़ियां पारक की जा सकती हैं, पारकिंग तक जाने के लिए मुस्तकिल जीनों के अलावा मुतहर्रिक बरकी जीने और वी.आइ.पी. के लिए लिफ्ट का निजाम हैं जेरे जमीन हिस्से में मस्जिदे नबवी से मुतअल्लिक इन्तिजामी दफातिर हैं, आग बुझाने, खतरात की वारनिंग और अमन व अमान के कियाम के लिए इनतिजामात किये गये हैं।

जेरे जमीन चार मन्जिला हिस्सा वुजू, गुस्ल और बैतुल्खला के इन्तिजामात हैं, इस मक़सद के लिए छे हजार टोटियां और दो हज़ार बैतुलखला बनाये गये हैं।

मस्जिदे नबवी को बरकी सपलाई के लिए दो बिजली घर हैं, जो मुसलसल काम करते रहते हैं, दो एहतियाती और हंगामी हालात के लिए ऐसे चार जनरेटर है जो खुद ब खुद काम करने लगें, इनके लिए इनवरटर भी है जो मस्जिद की एहतियाती जरूरत को पूरा करने के लिए फिट किये गगे हैं।

मस्जिदे नबवी के मरकजी दरवाजों के नाम

१. बाबुस्सलाम २. बाबे अबू बक्र सिद्दीक ३. बाबुर्रहमत ४. बाबुल हिजरह ५. बाबू जिबरईल ६. बाबुन्निसा ७. बाबु कुबा ८. बाबु उमरबिन खत्ताब ६. बाबु उस्मान बिन अफ्फान १०. बाबु अली इबने अबी तालिब ११. बाबु अब्दुल्मजीद १२. बाबु अब्दुल हमीद १३. बाबु मलिक सऊद १४. बाबु मलिक फहद

मस्जिदे नबवी की तौसीअ अहद बाअहद

अखलीन तामीर का रक़बा एक हजार पचास मीटर मुरब्बा

सात हिजरी में गजवे तबूक से वापसी के बाद तौसीअ शुदा एक हजार चार सौ पचास मीटर मुरब्बा

१७ हिजरी हजरत उमर रजि० के अहद में तौसीअ शुदा रकबा गियारह सौ मीटर मुरब्बा

२६–३० हिजरी, हजरत उस्मान रजि० के अहद में चार सौ छियान्नवे मुरब्बा मीटर

८८–६१ हिजरी उमवी खलीफा वलीद के अहद के दो हजार, तीन सौ उन्हत्तर मुरब्बा मीटर

१४१–१४५ हिजरी, अब्बासी खलीफ़ा महदी के अहद में दो हजार चार सौ पचास मुरब्बा मीटर

८८८ हिजरी सुल्तान अशरफ के अहद में एक सौ बीस मीटर

१२४५–१२७७ हिजरी अब्दुल मजीद (उस्मानी खलीफा) बारह सौ तिरान्नवे मीटर मुरब्बा

मलिक अब्दुल अजीज सऊद १३७२ हिजरी के दौर में छे हजार चौबीस मीटर मुरब्बा

फहद बिन अब्दुल अजीज के दौर में पचास हजार मीटर मुरब्बा

मस्जिदे नबवी के चारों तरफ कुल तौसीअ शुदा हिस्सा दो लाख पैंतीस हजार मुरब्बा मीटर

हरमैन शरीफैन की तौसीअ के बाद सऊदी हुकूमत का दूसरा बड़ा कार नामा

ममलिकते सऊदी अरब पहला इस्लामी मुल्क है जिसने मदीना मुनव्वरह में कुरआन की इशाअत का बैनुलअकवामी मरकज कायम किया है ये मरकज कुरआने करीम के नुसखों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

ज़िम्मेदारी का एहसास

मौलाना अली मियां

"देश की बुनियादी आवश्यकताओं पर गहरी नजर रखने वाले गम्भीर चिन्तक मेरी इस बात से सहमत होंगे कि इस समय देश की सबसे बड़ी जरूरत उस नैतिक अनुभूति की जागृति व जिम्मेदारी का एहसास है जो आधिकारिक वर्ग को इन खराबियों, अन्याय व अनाचार, संकुचित दृष्टिकोण, भाई–भतीजावाद, अनुचित पक्षपात के गर्त से ऊपर उठा सके, व्यापारियें, व कर्मचारियों को चोर बाजारी और हद से बढ़ी हुई नफाखोरी से सुरक्षित रखे और इस प्रकार देश को अव्यवस्था, बेराजगारी, महंगाई व अनाचार से बचा ले, जिसका खतरा सामने है और जिस के होते हुए आजादी की जन्नत परेशानियों की जहन्नम बन जाती है। यह सर्व विदित है कि हमारे समस्त ज्ञान, साहित्य व संस्कृति तथा भाषायी जरूरतों से बढ़कर यह नैतिक जरूरत है। मान लीजिये कि इस देश का एक ही कलचर, एक ही सभ्यता और एक ही भाषा हो जाए किन्तु इन खराबियों का खात्मा न हो तो क्या इस से देश की असल जरूरत पूरी हो जायेगी। और क्या इन बुराईयों पर पर्दा पड़ जायेगा। अगर दुनिया के अपराधी प्रवृति वाले और दुराचार लोग एक ही कलचर और एक ही भाषा अपना लें तो क्या दुनिया की कोई सभ्यता और कोई अदालत उनका गुनाह माफ कर देगी? क्या अगर तमाम दुनिया के डाकू एक ही वर्दी पहन लें, और एक ही बोली बोलने लगें तो यह कोई खुशी और इतमीनान की बात होगी। अतः एक समझदार व्यक्ति से यह आशा करनी चाहिए कि वह असल ध्यान उन बीमारिँयों पर देगा जो हमारे देश को घुन की तरह खा रही है, और इसकी बुनियादी को खोखला कर रही है।

इन बीमारियों का इलाज एक सही, शसक्त स्वयं जीवित और दूसरों में जीवन फूंक सकने वाले धर्म के अलावा नहीं है जो अपने मानने वालों में ईश्वर का सच्चा व पक्का विश्वास, और उस से सच्चा लगाव, आखिरत की पूछगछ का खटका पैदा करें, जो इस जमाने के भौतिकवाद और दुनिया की बढ़ी हुई लालच को अध्यात्मिक बल से दबाये। जो काम और लोभ से इतना ऊँचा हो कि हर युग की नयी नयी समस्याओं को हल कर सके और जिसको स्वयं कभी बदलने की जरूरत न हो जो मनुष्य के बनाये हुए छोटे छोटे घिरौंदों और देश की सीमाओं से ऊपर उठकर वसुधैव कुदुम्बकम में विश्वास रखता हो, जिसकी बुनियाद किसी जमाने की रस्मों, रिवाजों और आदतों पर न हो बल्कि कुछ अमिट सिद्धान्तों और पायदार सच्चाइयों पर हो जिन के अन्दर मन मस्तिष्क को अपना काम दिखाने और जीवन की शिराओं में ताजा खून पहुंचाने की गुंजाइश हो, जिस के पास लौकिक व पारलौकिक जीवन दोनों गरीबी व अमीरी दोनों, स्त्री पुरूष दोनों के लिए जीवन की पूरी व्यवस्था व संविधान हो, जिसके पास एक ऐसे परिपूर्ण व्यक्तित्व के जीवन का ऐसा भरपूर व सुरक्षित इतिहास हो जिस से मानव जाति के प्रत्येक वर्ग व समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्ग दर्शन मिलता हो।

इस देश के नेताओं और प्रशासन के जिम्मेदारों को ईश्वर ने एक बहुत बड़ी कौम की अमानत सुपुर्द की है और बुद्धि व विवेक की क्षमतायें दी हैं। अगर मेरी कमजोर आवाज उन तक पहुंच सके तो मैं विनम्र निवेदन करूंगा कि देखिये कहीं यह क्षमतायें छोटी छोटी बातों और छोटे छोटे कामों में खर्च होकर न रह जायें। एक बार साहस करके राष्ट्र को मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य का रास्ता दिखा दीजिये। अगर आप ने ऐसा किया तो भारत न केवल अपनी आजादी और इज्जत ही बरकरार रख सकेगा, बल्कि नेशन्स की सरदारी उसके हाथ में आ जायेगी।"

अनुवादः एम० हसन अंसारी

इन्सानी जान व माल का नुकसान करते जानवर

मुशर्रफ अली

ऐसा मालूम होता है कि देश में जानवरों की सुरक्षा का जितना ध्यान रखा जाता है, उतना इन्सानों की सुरक्षा का नहीं। अपनी कार के नीचे ६ लोगों को कुचल कर मार देना और ८ को अपाहिज बना देना यहां उतना बड़ा जुर्म नहीं, जितना कि एक हिरन का शिकार करना। आदमी के हाथों अगर किसी जानवर को कोई नुक्सान पहुंच जाए तो पशु कल्याण के चैंपियन आसमान सर पर उठा लेते हैं, लेकिन इन जानवरों की वजह से इन्सानों को कितना नुक्सान पहुंच रहा है इस पर किसी की नजर नहीं है। देश में कुत्ते, बन्दर और सांपों के काटने से होने वाली मौतों का आंकड़ा बड़ी ही खौफनाक तस्वीर पेश करता है।

सामान्य लोगों को यह बात बड़ी आश्यर्चजनक और अविश्वसनीय लग सकती है मगर यह वास्तविकता है कि प्रतिवर्ष लगभग १५ से २० लाख लोगों को कुत्ते और बन्दर काटते हैं। इनमें से लगभग ५० हजार लोग समय पर इलाज न मिल पाने के कारण मौत का शिकार हो जाते हैं। इसी प्रकार २ लाख लोगों को सांप डसते हैं जिसमें से लगभग ४० हजार लोगों की मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा शेर, तेन्दुए, भेड़िये, हाथी और अन्य जंगली जानवरों के कारण देश में प्रतिवर्ष १५ हजार लोग मर जाते है।

दिल्ली में बन्दरों का आतंक है। कई सरकारी इमारतों पर इनका बसेरा है। तीस हजारी कोर्ट के परसिर में इन बन्दरों की वह धमाचौकरी मचती है कि कई बार काम करना दुश्वार हो जाता है। तीस हजारी कोर्ट के जजों विजेन्द्र जैन और रेखा शर्मा ने नगर निगम से इन बन्दरों की शिकायत भी की मगर नगर निगम ने इसकी कोई सुध नहीं ली।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक देश में कुत्तों की संख्या एक करोड़ को पार कर चुकी है। दुनिया भर में रैबीज से होने वाली ८० प्रतिशत मौतें भारत में होती है। पहले स्थानीय प्रशासन की मदद से आवारा कुत्तों को जहर देकर मरवा दिया जाता था, लेकिन अब इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। केन्द्र की एन०डी०ए० सरकार में जब मेनका गांधी मंत्री थी तो उन्होंने पशु–प्रेम में इस तरीके को क्रूर ठहरा कर बन्द करा दिया।

इसके स्थान पर एनीमल बर्थ कंट्रोल कार्यक्रम चलाया गया, जो न केवल बुरी तरह फ्लॉप हो गया बल्कि इसने भ्रष्टाचार का रास्ता खोल दिया। कुत्तों को पकड़ कर दवाई पिलाने या उनकी नसबन्दी करने के लिए प्रति कुत्ता ६५०–७०० रूपये की राशि स्वीकृति की गयी थी। बेशुमार स्वयं सेवी संस्थाएं बन गयी और कागजों पर ही कुत्तों की नसबंदी शुरू हो गयी अवाम का पेसा पानी की तरह बहाया जा रहा है, लेकिन न कुत्तों की संख्या में कोई कमी आ रही है और न ही रैबीज के मरीजों में।

बेंगलूर के केंपगोड़ा इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल सांइस के प्रोफेसर डॉ जयकृष्ण महेन्द्रा की टिप्पणी थी कि पशु कल्याण संस्थाओं को समझना चाहिए कि जानवरों के संरक्षण से ज्यादा जरूरी है अकारण होने वाली इन्सानी मौतों को रोकना।

बन्दरों और कुत्तों के बाद इन्सानी जानों को सबसे ज्यादा नुक्सान सांपो से है। हमारे देश में सांपो के कोटने का इलाज मंहगा और मुश्किल होता जा रहा है। सरकारी अस्पतालों में इसके इंजेक्शन उपलब्ध नहीं हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि फौरन इलाज न मिल पाने के कारण भारत में प्रतिवर्ष ४० हजार लोगों की मौत हो जाती है। पिछले वर्ष पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और महाराष्ट्र के कुछ खास जिलों में १० हजार से अधिक मौतें हो गयी। मेनका गांधी की ही याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सांपो के पकड़ने पर रोक लगा रखी है।

ग्रीन आस्कर पुरस्कार विजेता माइक पांडेय कहते हैं कि बाज और गिद्ध मर रहे हैं तो सांपो की संख्या बढ़ रही है। कीटनाशकों का अंधाधुध प्रयोग चूहो, मेंढकों और दूसरे छोटे जीवों को मार रहा है। यही कारण है कि सांप खाने की तलाश में घरों में घुस रहे हैं। जंगल में छोटे जानवर कम हो रहे हैं। तो बड़े जानवर आबादी

की तरफ आ रहे हैं।

जंगली जानवरों ने आबादी में आकर बहुत उत्पात मचा रखा है।

सरकार या प्रशासन इसके लिए कुछ करने को तैयार नहीं है। दूसरी ओर कानून इतने सख्त बनाये गये हैं कि जानवरों के उत्पात से पीड़ित लोग कुछ करने की हिम्मत भी नहीं कर पाते।

उत्तर प्रदेश के बलरामपुर, सिद्धार्थनगर व बहराईच आदि जिलों के नेपाल बार्डर से लगे इलाकों में जंगली जानवर लोगों की फसले नष्ट कर देते हैं। कई बार तो अजगर और दूसरे जंगली जानवर बकरियों और गायों तक को खा जाते है। वन विभाग के अधिकारी जनता की शिकायतें दूर करने के लिए कुछ नहीं करते और यदि कोई आदमी उन जंगली जानवरों को नुक्सान पहुंचा दे या उन्हें भगा दे तो ये वन विभाग वाले उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने और उन पर जुर्माना लगाने में देर नहीं लगाते।

उत्तरांचल के मुख्य वन्य जन्तु प्रतिपालक कार्यालय की जानकारी के मुताबिक राज्य के गठन से लेकर अब तक १७० लोग नरभक्षियों के शिकार हो चुके हैं और अन्य ५०० लोगों को नरभक्षी घायल कर चुके हैं। कानपुर, लखनऊ, आगरा, फैजाबाद और सीतापुर सहित दो दर्जन जिलों में बन्दरों का कहर इस प्रकार बरपा है कि लोगों को अदालत की शरण लेनी पड़ी। झारखंड के हजारीबाग, रांची, बोकारो, चाईबासा, चतरा, लतेहार और गुमला में जंगली हाथियों का आतंक है। इन इलाकों में हाथियों ने अब तक २५० से ज्यादा लोगों की जाने ले ली है। पश्चिम बंगाल के वर्धमान जिलो में पिछले वर्ष सांपों ने २६,४८६ लोगों को काटा जिनमें १३०१ लोगों की मौत हो गयी। पूर्वोत्तर राज्यों में चूहे फसलों को ऐसे चौपट कर रहे हैं कि केन्द्र सरकार ने उनसे निबटने के लिए ५८ करोड़ रूपये दिये हैं।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

बच्चों को पानी पिलाकर न सुलायें रात को दो तीन बार उठाकर पेशाब करवा दिया करें। ताकि यह आदत जल्द छूट जाये।

क्रियोजोटः— पहली रात्रि में पेशाब कर देना। मुश्किल से जग सकना

कास्टिकमः— सर्दी की वजह से पेशाब करना।

सेन्टोजाइनः— कृमि की वजह से पेशाब करना।

सीपियाः— छोटे बच्चों में उपयोग।

इक्लीसेटमः— पेशाब रोकना कठिन, दौड़ कर पेशाब जाना।

बेन्जोपिक एसिडः— घोड़े के पेशाब की सी बदबू, पेशाब का रंग कपड़े पर से मुश्किल से उतरता है।

बहुत जटिल स्थिति में पहले सल्फर २०० की एक खुराक दे उसके बाद एक सप्ताह तक प्लेन्टेगो ३० दें। इस मर्ज में थायरोयडीन भी उपयोगी दवा है।

दांत निकलते समय बहुत बेचैनी व ज्वर— एकोनाइट ३० सर गर्म व पांव ठंड हो बच्चा बुखार से हप रहा हो। बेलाडोना ३० बच्चा बहुत चिड़चिड़ा, बहुत रोना, पर गोद में लेकर सिर कन्धे पर रखकर यदि घुमाया जाय तो चुप हो जाता है। केमोमिला ३० दर्दकारक दन्तोदगमन, दांत निकलने के साथ ही सड़ने लगना, मसूड़े छिद्रमय, क्रियोजोट ३० दस्तों के साथ दांत निकलने पर पोडोफाइलम ३० देना चाहिए। दांत निकलते समय कड़े पदार्थ को काटने की इच्छा होने पर फाइटोलक्का ३० देना चाहिए।

जैसे ही दांत निकलना शुरू हो वैसे ही बच्चो को वाइकोमिक मिमण २१ नम्बर पिलाना शुरू कर दे। २—३ गोली दिन में ३ बार कुनकुने पानी में घोलकर पिला दें। इससे दांत निकलते समय होने वाली कई परेशानियां दूर हो जायेगी। और दांत बड़ी आसानी से निकल आयेगा।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

की इशाअत तमाम जबानों उसके मआनी व तरजुमे को बड़ी जिम्मेदारी से पेश कर रहा है। किंग फहद कामपलेक्स ने १४०५ से जुमादस्सानियाः १४२६ हिजरी तक कुरआने पाक के बीस करोड़ से जाइद नुसखे छापे हैं एक रिर्पोट में यह बात बताई गई है कि १८ करोड़ ६० लाख नुसखे तकसीम कर दिये गये हैं किंग फहद २ लाख ५० हजार मुरब्बा मीटर पर मुहीत है। यह काम्पलेक्स कुरआने पाक के नुसखे तफसीरी रिकार्ड करदह आडियु और वीडियों कैसीटस तैयार करने में मस्रूफ है यह काम्पलेक्स सालाना एक करोड़ नुसखे तैयार करने की अहलियत रखता है। यह काम्पलेक्स ४५ जबानों में कुरआने पाक में मआनी व तरजुमे के साथ शाये करता है। कुरआने पाक की आसान तफसीर काम्पलेक्स का एक अहम कारनामा समझा जाता है।

अनुवादक— आफताब आलम नदवी खैराबादी

बच्चों के रोग व होम्योपैथिक उपचार

(नोट : लेखक ने किसी दवा की प्रयोग विधि नहीं लिखी अतः
डाक्टर की सलाह के बिना किसी दवा का प्रयोग न करें। सम्पादक)

डा० अब्दुल लतीफ चतुर्वेदी

छोटे बच्चो में कुछ ऐसी गलत आदत पड़ जाती है जिसकी वजह से मां–बाप परेशान हो जाते है और बच्चे को डांटते, और मारते रहते है। जबकि ये मूलतः मनोवैज्ञानिक समस्यायें होती हैं। इसलिये इन आदतों को छुड़ाने के लिए प्यार, समझ और सहानुभूति की जरूरत होती है। इसके साथ अगर आप होम्योपैथिक दवायें अपने बच्चों को पिलायें तो बच्चों में इन आदतों को जल्द छुड़ाने में आप को अधिक सफलता मिल सकती है।

१. अंगूठा चूसनाः—

छोटे बच्चों में अंगूठा चूसना एक आम बात है पर कई बच्चों में काफी बड़े हो जाने पर भी आदत नहीं छूटती। लगातार अंगूठा चूसने पर ऊपर के सामने वाले दांत बाहर आ जाते हैं। त्वचा मोटी हो जाती है। कैलगे साइटिस हो जाता है तथा प्रभावित अंगों में घाव भी हो जाता है। बच्चों को बड़े प्यार से समझाते रहना चाहिए कि इस आदत से उसका चेहरा कुरूप हो जायेगा। होम्योपैथ में कुछ ऐसी दवायें है जो इस समस्या को लाभ पहुंचाती है जैसे— नक्स वोमिका, नैट्रम म्योर, फॉसफोरस, लाइकोपोड़ियम आदि।

२. दांत से नाखून काटनाः—

यदि आप के बच्चे दांत से नाखून काटते है और स्थाई रूप से आदी बन गये है तो यह भी एक गंदी आदत है। स्कूल या घर में किसी प्रकार बच्चों में यह गन्दी आदत पड़ जाती है। इसे छुड़ाने में यदि समझाने से या लालच देने से भी बात न बने तो बच्चे के नाखूनों पर आयोडीन या ऐसा ही कोई अखादय पदार्थ लगा दें जिसके खराब स्वाद के कारण बच्चा खुद नाखून काटना छोड़ देगा। वैसे इस आदत से घबराने की जरूरत नहीं है कई बार बच्चा बड़ा होने पर यह आदत छोड़ देता है। इसके लिए एमनो बोम होम्योपैथ दवा इस आदत को छुड़ाने के लिए आप की मदद कर सकती है।

३. मिट्टी खानाः—

कई बच्चों में अभोज्य पदार्थ खाने की तीव्र लालसा पैदा हो जाती है। ऐसे बच्चे चूना, मिट्टी कोयला आदि खाने लगते हैं जब कोई देख लेता है तो डांट फटकार लगती है तो बन्द कर देते है। पर फिर भी आंख चुराकर ऐसा करते रहते हैं। इसके लिए सावधानी पूर्वक सूझ–बूझ से काम लेते हुए बच्चो को ऐसी असामान्य चीजों से दूर रखने की जरूरत है। दीवार की बालू, चूना, स्लेट का चूरा, खड़िया मिट्टी, खपरैल खाने की आदत होने पर एल्युमिना दीजिये। स्लेट, पेन्शिल खाने पर नाइट्रिक ऐसिड कोयला खाने पर एल्युमिना कल्केरिया कार्ब कपड़े खाने की आदत में भी एल्युमिना देना लाभकारी है।

४. हकलाना तुतलानाः—

हकलाना भी बच्चों की एक आम बीमारी है इसमें बोलना शुरू करने में बहुत कठिनाई होती है। और एक ही शब्द को बार बार दोहराना पड़ता है। इस बीमारी का सही कारण अभी तक अज्ञात है। इस समस्या का अस्थाई उपचार गीत गाना है। ऐसे बच्चे के लिए नई तकनीक स्पीच थेरेपी भी काफी लाभ प्रद सिद्ध हुई है। इसकी मुख्य दवा है स्ट्रेमोनियम अन्य दवाये हैं— नक्स वोमिका, आर्स एल्बम एनाकार्डियम, कास्टिकम, बेलाडोना।

५. बिस्तर पर पेशाब करनाः—

बड़ी उम्र में भी बच्चों का बिस्तर पर पेशाब कर देना भी एक ऐसी समस्या है जिससे मां बाप बहुत पेरशान हो जाते है। और बच्चे को भी रोज शर्मिन्दगी से गुजरना पड़ता है। मुत्राशय की कमजोरी के कारण ऐसे बच्चे मूत्र रोकने में अस्मर्थ हो जाते है। यह शिकायत खास तौर से लड़को, जुड़वा बच्चे मन्दबुद्धि बच्चे, तनाव दुश्चित, भयग्रस्त बच्चों में मुख्य रूप से पाई जाती है। रोग के कारणो को ठीक रूप से उपचार न होने के कारण वर्षों तक यहां तक कि काफी बड़े हो जाने तक भी यह शिकायत कइयों में बनी रहती है। नींद के समय उनको पेशाब की हाजत होती है और वे पेशाब नाली पर जाकर कर रहे हो ऐसा स्वप्न आता है और पेशाब निकल जाता है। और नींद खुल जाती है तब जाकर पता चल पाता है कि पेशाब नाली पर नहीं बिस्तर पर ही हो गया है। बड़ी उम्र में भी ऐसा हो तो बच्चों को कितनी शर्मिन्दगी से गुजरना पड़ता है। इसे भुक्तभोगी ही जान सकते हैं इस मर्ज में होम्योपैथ्य दवा काफी लाभ प्रद है। साथ ही ऐसे

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

बच्चों की ममता

सुरैया खानम

एक दिन हजरत उमर (रजि०) मदीना में अपने घर में बैठे कबीले के उन दो सरदारों की प्रतिक्षा कर रहे थे। जिन्हें गवर्नर पद दिये जाने की सिफारिश की गयी थी। किसी व्यक्ति को गवर्नर पद के लिए चुनना आसान न था। किसी के कुशल बुद्धिमान– नायक होने पर भी यह हमेशा विश्वास नहीं किया जा सकता कि वह सहृदय और करूणाशील भी होगा।

गवर्नर पद के लिए पहले प्रत्याशी का आना अधिक प्रभावकारी रहा। उसने अपना हाथ हिलाते हुए सुन्दर अरबी भाषा में कहा– आप पर सलामती और रहमत हो अल्ला की। हजरत उमर (रजि०) ने उसके शाही अन्दाज पर ध्यान दिया और इस पर भी कि वह एक सुन्दर जड़ाऊ कपड़ा पहने हुए है और शानदार पगड़ी बान्धे हुए है। हजरत उमर (रजि०) ने उसे बैठने के लिए कहा तो वह बिना झिझक चटाई पर हजरत उमर (रजि०) के बगल में बैठ गया और वहां मेहमानों के लिए रखी गयी खुजूरों में से उसने कुछ खुजूरें खाईं। उसने कुछ बातें करने के बाद हजरत उमर (रजि०) को यह यक़ीन हो गया कि वह एक योग्य और बुद्धिमान नेता है, जो गवर्नर पद के लिए पूरी तरह उपयुक्त है।

कुछ देर बाद दूसरे प्रत्याशी के हड़बंड़ाते हुए आने से उनके बीच चल रही बातचीत एकाएक भंग हो गयी वह अपने आने में देरी के लिए खेद प्रकट करता हुआ अपने फटे पुराने कपड़े पर जमी धूल को झाड़ते हुए तथा अपनी पगड़ी को ठीक करते हुए जो कि सरक कर थोड़ा कान पर आगयी थी, घर के अन्दर दाखिल हुआ। उसने (सलाम के पश्चात) कहा" ऐ अमीरूल मोमिनीन मैं देर से पहुंचा इसके लिए मुझे क्षमा करें। सुनिये जब मैं आ रहा था, तो रास्ते में एक बूढ़ी औरत और उसके गधे के पास से मेरा गुजर हुआ। गधे का पैर दो भारी पत्थरों के बीच फंस गया था। उसकी मदद किये बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता था। और यह कठिन काम था। आप इसे समझ सकते हैं मुझे खेद है कि मैं कुछ विलम्ब से पहुंचा।

हजरत उमर (रजि०) ने उसकी विवशता को स्वीकार किया और उससे कहा कि तुम बिल्कुल निश्चिन्त हो जाओ। इस अवसर पर पहला प्रत्याशी उठा और बोला– खूब रही मैं आप से पूछता हूं कि दोनों में से कौन अधिक महत्व रखता है गवर्नर का पद या गधे का पैर।

उसी समय हजरत उमर (रजि०) का एक बच्चा दौड़ता हुआ कमरे में आया और उनकी गोद में उछल कर बैठ गया। हजरत उमर (रजि०) ने उसे प्यार से अपनी बाहों में उठा लिया और उसकी पेशानी को दो बार चूमा।

यह चीज पहले प्रत्याशी को आश्चर्यजनक और अरूचि की प्रतीत हुई और वह अपने मनके भाव को छिपा न सका बोलाः "अमीरूल मोमिनीन" मैंने तो ऐसा कभी नहीं किया। मेरे दो बच्चे हैं। जिनमें किसी को भी इतना साहस नहीं है कि मेरे निकट आ सके। और मैं कदापि चुम्बन नहीं ले सकता।

हजरत उमर (रजि०) ने उस प्रत्याशी को घूरा और अपना सिर हिलाकर कहा भाई मैं क्या कर सकता हूं। यदि अल्लाह तुम्हारे हृदय को दया से भर दे तभी यह सम्भव है। लेकिन याद रखना अल्लाह उन्ही पर दया दर्शाता है जो उसके पैदा किये हुए प्राणियों पर दया दर्शाता है।

हजरत उमर (रज़ि०) ने महसूस किया कि दूसरा प्रत्याशी परेशान दिखायी दे रहा है। उन्होंने उससे पूछा क्या बात है?

ऐ अमीरूल मोमिन इसके विपरीत मैं परेशानी में हूं मेरे केवल पांच बच्चे है लेकिन वे हमेशा मुंझ पर उछलते कूदते रहते है। मेरे घर छोड़ने से पूर्व मेरी सबसे छोटी बेटी नहीं चाहती कि मैं बाहर जाऊं। उसने हमारे चोंगे को कस कर पकड़ रखा था वह चाहती थी कि मैं उसे गोद में ले लूं। इसी कारण जैसा कि आप देख रहे हैं मेरे कपड़े में कुछ धूल लगी हुयी है।

हजरत उमर (रजि०) मुस्कुराये और अपने सचिव की ओर देखा जो इस प्रतीछा में था कि हजरत उमर (रजि०) किस व्यक्ति को गवर्नर बनाने का फैसला करते हैं। हजरत उमर (रजि०) ने आदेश दिया कि इस दूसरे प्रत्याशी को गवर्नर पद के लिए नियुक्ति पत्र लिखकर दे दिया जाये। मुझे यकीन है कि इस कार्य के लिए यह उपयुक्त हैं।

तुम समझे हजरत उमर (रजि०)

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

(पृष्ठ ४० का शेष)

करने का समय आ गया है।

भारतीयों का दो हजार खरब रूपया स्विस बैंको में

नई दिल्ली सीबीआई के पूर्व संयुक्त निदेशक बी.आर.लाल के मुताबिक स्विस बैंकों में इस समय भारतीयों का २०० लाख करोंड़ रूपया काले धन के रूप में जमा है। यदि इस धन को निकालने की व्यवस्था हो जाए तो इतनी राशि देश के ३५ वर्षों के बजट के लिए काफी होगी। यह रकम पांच मिलियन डालर के बराबर है। उन्होंने कहा कि भारत को जितना नुकसान आतंकवादियों ने नहीं पहुंचाया उस से कही ज्यादा नुकसान देश के लाखों ऐसे भ्रष्ट लोगों ने पहुचांया है जिन्हें वित्तीय आतंकवादी कहा जा सकता है। टैक्स चोरी करने वाला हर शख्स वित्तीय आतंकवादी हैं और उस से उसी तरह निपटा जाना चाहिए जैसे किसी आतंकवादी से निपटा जाता है।

श्री लाल ने सुझावा दिया है कि सरकार स्विटजरलैण्ड की सरकार से बात करे और जिन भारतीयों के पैसे उस देश में जमा हैं उनके खातों का खुलासा करने को कहें। यदि ऐसा होता है तो देश को न रक्षा के लिए धन की कमी होगी और न ही विकास कार्यों के लिए। लाल ने कहा कि ताकतवार लोगों की भारी संपत्ति देश–विदेश में पड़ी है। लाल ने कहा कि बेनामी संपत्ति सामने लाने के लिए जरूरी है कि एक राष्ट्रीय संपत्ति रजिस्टर बनाया जाए जो आज के कंप्यूटर युग में संभव है। उन्होंने कहा कि सीबीआई जैसी जांच एजेंसी पर भी ताकतवर राजंनीतिज्ञों का साया है। सीबीआई मध्यम दर्जे के अपराधियों को बेनकाब करने में तो काफी कामयाब है लेकिन उच्च स्तर के अपराधियों के मामले में नियम और शैली बदल दी जाती है।

सचर समिति की कुछ अहम सिफारिशें

जस्टिस राजेन्द्र सच्चर समिति ने पाया है कि देश में मुसलमानों की दशा दलितों से कुछ बेहतर है, लेकिन हिन्दू उच्च जातियों, अन्य पिछड़े वर्ग तथा अन्य अल्पसंख्यकों से नीचे है।

पुलिस बैंको, शिक्षण संस्थाओं, स्वास्थ्य सेवाओं में मुसलमानों का प्रतिनिधितव बनाने के उपाय करने का सुझाव देते हुए समिति ने साक्षात्कार बोर्डों में अल्पसंख्यक सदस्य नियुक्त करने पर जोर दिया। समिति ने सुझाव दिया है कि प्रधानमंत्री के १५ सूत्री कार्यक्रम के तहत उन सभी ५८ जिलों को रखा जाना चाहिए जहां मुसलमानों की जनसंख्या २५ फीसदी या इससे अधिक है। मुस्लिम बहुल इलाकों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार कर उन्हें बैंकों से पर्याप्त ऋण मुहैया कराने का सुझाव दिया है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में अल्पंसख्यक छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए समिति ने फार्मूला सुझाया है कि जिस में १०० अंको के पैमाने पर ६० अंक प्रतिभा को ४० अंक पिछड़ेपन को दिए जाए। समिति ने यूजीसी को सुझाव दिया कि वह उन संस्थानों को अनुदान प्रदान करे जहां अल्पसंख्यक छात्रों की संख्या पर्याप्त है।

उर्दू भाषा के विकास के उपाय सुझाते हुए समिति ने उन क्षेत्रों में जहां पर्याप्त संख्या में उर्दू भाषाभाषी रहते हों, उर्दू को शिक्षण संस्थानों में वैकल्पिक विषय बनाने का सुझाव दिया है। समिति ने मुस्लिम बहुल इलाकों में अच्छे सरकारी विद्यालय खोलने, बालिकाओं के अलग विद्यालय स्थापित करने, बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की है।

समिति ने मुस्लिम आबादी वाले पुलिस थाने में कम से कम एक पुलिस इंस्पेक्टर या सब इंस्पेक्अर नियुक्त करने का सुझाव दिया। समिति ने वक्फ संपत्तियें के बेहतर रख–रखाव तथा समुदाय की बेहतरी में उनके सक्रिय उपयोग की जरूरत बताई है।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

ने पहले प्रत्याशी से कहा कि एक नायक या किसी कबीले के सरदार के लिए यह अनिवार्य है कि जिसे गवर्नर बनाया जाए वह दयालु हो और उसमें इस की इच्छा हो कि वह कुछ समय दूसरों की मदद के लिए निकाल सके। और इस भले आदमी ने अपनी यहां की उपस्थिति में यह प्रमाण दे दिया कि इसमें दोनों विशेषताएं पायी जाती है

यह पहला प्रत्याशी हजरत उमर (रजि०) की बातों को समझने में अस्मर्थ रहा। वह इसे समझे बिना वहां से चला गया कि गवर्नर पद वह क्यों नहीं प्राप्त कर सका और यह पद ऐसे बेढगें व्यक्ति को क्यों दिया गया जो बच्चों, बूढ़ी औरतों और गधों से जुड़ा हुआ है। (किन्गडम ऑफ जस्टिस पुस्तक से)

लेखक–जनाब खुर्रम मुराद

तुम ज़मीन वालों पर रह्म करो
आसमान वाला तुम पर रह्म करेगा।
करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
ख़ुदा मेहरबां होगा अ़र्शे बरीं पर

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

ब्रिटेन के मुसलमानों को अपनी समस्याऐं शरअी अदालतों में हल करने की अनुमत

ब्रिटेन इस्लामी देशों से संबन्ध रखने वाले ब्रिटिश नागरिकों को इस बात की इजाज़त है कि वह अपनी समस्याओं को ब्रिटेन की अदालतों के बजाए शरअ़ी अदालतों में पेश कर सकें। इन शरअ़ी अदालतों की सुनाई गई सजाओं को ब्रिटिश अधिकारी स्वीकार भी करते हैं हालांकि शरअ़ी अदालतों को कोई कानूनी हैसियत प्राप्त नहीं है। एक मुकदमे में एक रूमाली निवासी ने अपने मुकदमे को ब्रिटिश अदालत से निकाल कर सुमालियाई मुसलिम खानगी शरअी अदालत में दायर किया। ब्रिटिश गुप्तचर एजेंसी स्काटलेण्डयार्ड के प्रवक्ता ने कहा कि ब्रिटेन में मुसलमान निवासियों को अपने मुकदमों को शरअी अदालतों में पेश करने की अनुमत है। लेकिन खान्दानी हिंसा और बलात्कार के मुकदमें खुद ब्रिटिश अदालतों में ही चलाए जाते हैं।

ब्रिटिश क्वीनमेरी यूनिवर्सिटी आफ लन्दन के एक सीनियर लेक्चरर का कहना है कि शरअी अदालतों में मुकदमों की सुनवाई जल्द होती है और सजाओं पर अमल भी करवाया जाता है। इसी प्रकार हिजाज कालेज इस्लामिक यूनिवर्सिटी के प्रिंसिपल बैरिस्टर फजलुल खत्ताब सिद्दीकी ने भी कहा है कि ब्रिटेन मे शरअी अदालतों की लोकप्रियता (मकबूलियत) में इजाफा हो रहा हे। और अगले दस वर्षों में ब्रिटेन में शरअी अदालतों का एक बड़ा नेटवर्क कायम हो जाएगा।

हालात बदलने के कारण इस्तीफा दिया

अमेरिका के वर्तमान रक्षा मंत्री डोनाल्ड रम्सफेल्ड ने कहा है कि कांग्रेस चुनावों के बाद बदली हुई राजनीतिक परिस्थितयों के कारण उन्होंने इस्तीफा देने का फैसला किया जबकि राष्ट्रपति बुश ने कहा कि चुनाव केनतीजों से रम्सफेल्ड के इस्तीफे का कोई लेना–देना नहीं है।

श्री रम्सफेल्ड ने अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में कहा कि अब कांग्रेस का स्वरूप बदल जाएगा, एक अलग प्रकार का माहौल होगा, मुझे लगा कि मेरा इस्तीफा देना सबके लिए अच्छा होगो दूसरी तरफ, नए रक्षा मंत्री के रूप में राबर्ट गेट्स की नियुक्ति को बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों में संसद की मंजूरी दिलाने में बुश को कड़ी मशक्कत करनी पड़ सकती है।

डोल रहा है विश्व नेता का सिंहासन

प्रसिद्ध लेखक ऑस्कर वाइल्ड ने कहा था, एक सदन की हार को दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है लेकिन दोनों की हार को लापरवाही ही कहा जाएगा। अमेरिकी कांग्रेस के दोनों सदनों, सीनेट व प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटों के हाथों करारी मात मिलने के बाद राष्ट्रपति बुश यह सोचनेपर मजबूर हो रहे हैं कि आखिर गलती कहां हुई। दुनिया की एकमात्र महाशक्ति के महानायक कीपार्टी की ऐसी दुर्गति की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। वस्तुतः इस हार ने बुश के विश्व नेता के सिंहासन को भी हिला कर रख दिया है।

अमेरिका में रिपब्लिकन तम्बू उखड़ने में सबसे महत्वपूर्ण कारण इराक युद्ध रहा है। राष्ट्रपति बुश भी इस बात को स्वीकार करते हैं और इसके लिए उन्होंने इराक़ नीति के सूत्रधार डोनाल्ड रम्सफेल्ड को रक्षामंत्री पद से हटा भी दिया है। लेकिन उन्होंने इराक से अमेरिकी सेनाओं की वापसी से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि ऐसा करना हार मानी जाएगी और हार हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। बहुमत प्राप्त डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता नैंसी पैलोसी ने साफ कह दिया है, 'मिस्टर प्रेसिडेंट हमें इराक पर नई दिशा चाहिए। इराक के अलावा अमेरिका के लिए सरदर्द बने ईरान और उत्तर कोरिया के प्रति वाशिंगटन की नीतियों पर भी अब सवाल उठने लाज़िमी हैं इसके अलावा अमेरिका में अब यह भी माना जाने लगा है कि मध्यपूर्व की समस्या को ताकत के बल पर नहीं हल किया जा सकता। यूरोप के कई नेताओं ने रिपब्लिकंस की हार का स्वागत किया है और कहा है कि अब यूरोप को विश्व के मामलों में पहल

(शेष पृष्ठ ३६ पर)